



नबी ﷺ की संक्षिप्त जीवनी



लेखक:

हैसम बिन मुहम्मद सरहान

पूर्व शिक्षक अल-हरम शिक्षण संस्थान, मस्जिद -ए- नबवी

व महा प्रबंधक “अत्तासी अल-इल्मी डॉट कॉम”

www.alsarhaan.com

غفر الله له ولوالديه ولن أعانه على إخراج هذا الكتاب

अल्लाह हमारे शौख, उनके माता पिता तथा जिन्होंने इस किताब को मूर्त रूप
देने में उनकी सहायता की सब को क्षमा करे

हिंदी अनुवाद:

साबिर हुसैन मुहम्मद मोजीबुर रहमान

[रिसर्च स्कॉलर, इस्लामिक यूनिवर्सिटी मदीना मुनव्वरा]



प्रथम संस्करण

सभी अधिकार सुरक्षित हैं

सिवाय उसके जो लेखक के पुनरावलोकन पश्चात फ्री बाँटने के लिये इसका अनुवाद अथवा
प्रिंट करना चाहे

निम्नांकित ईमेल पर संपर्क करें:

islamtorrent@gmail.com

sabirhussainzamanwi@gmail.com

فصح وزارة الإعلام

प्राक्कथन

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ نَحْمَدُهُ وَنُسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يَضِلَّ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ﷺ، ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَمُونُوا إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ﴾ ﴿١٠٢﴾ [آل عمران]، ﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَجِدٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا﴾ ﴿١﴾ [النساء]، ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا﴾ ﴿٧٠﴾ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ فَتَقَدَّرَ فَازٌ فَوْزًا عَظِيمًا [الأحزاب] ﴿٧١﴾

أَمَّا بَعْدُ:

यह कुछ वाक्य हैं जिनका ज्ञान होना हरेक उस व्यक्ति के लिए आवश्यक है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत आपका ढंग और आपके बारे में जानने का इच्छुक हो, इब्नुल कैयिम रहिमहुल्लाह कहते हैं: (जब लोक एवं परलोक में बंदे का सौभाग्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत व मार्गदर्शन से जुड़ा है अतएव हरेक व्यक्ति पर वाजिब है जो अपने आपका शुभचिंतक है और अपनी मुक्ति व सौभाग्य चाहता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विषय में, आपकी जीवनी तथा सीरत के विषय में ज्ञान अर्जित करे ताकि वह जाहिलों व अज्ञानियों की पंक्ति से निकल जाए और आपके अनुयायियों, आपके संगठन तथा समूह में शामिल हो जाए, और इस विषय में लोगों के कई प्रकार हैं कुछ कम करने वाले, तो कुछ अत्याधिक करने वाले एवं कुछ तो बिल्कुल वंचित ही हैं, और फजल (कृपा) तो अल्लाह के हाथ में है जिसे चाहता है उस पर अपनी कृपा दृष्टि रख देता है, और अल्लाह बड़ा महान फजल वाला है।)

मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह (ईश्वर) से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे तथा आपको अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत करने वाला बनाए और जिसका आपने आदेश दिया है उस आदेश का पालन तथा जिससे मना किया है उससे रुकने का आशीर्वाद दे, हे अल्लाह मुहम्मद और मुहम्मद के परिवार वालों पर दरूद व रहमत नाज़िल (अवतरित) कर जिस प्रकार तूने इब्राहीम और उनके परिवार वालों पर रहमत नाज़िल की, हे अल्लाह तू मुहम्मद और मुहम्मद के परिवार वालों पर बरकत (आशीर्वाद) नाज़िल कर जिस प्रकार तूने इब्राहीम और इब्राहीम के परिवार वालों पर बरकत नाज़िल की थी, निःसंदेह तू प्रशंसा के योग्य एवं महिमावान है।



पहला: पाठ
नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का
जीवन चरित, स्वभाव एवं गुण





आप ﷺ का स्वभाव एवं गुण

<p>नबी ﷺ की वंशावली</p>	<p>आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुलमुत्तलिब पुत्र हाशिम पुत्र अब्दे मुनाफ़ पुत्र कुसैय पुत्र किलाब पुत्र मुरा पुत्र काब पुत्र लुऐय्य पुत्र गालिब पुत्र फ़िह पुत्र मालिक पुत्र अन-नज़्र पुत्र किनाना पुत्र खुज़ैमा पुत्र मुदरिका पुत्र इलयास पुत्र मुज़र पुत्र नज़ार पुत्र मअद पुत्र अदनान, तथा अदनान अल्लाह की राह में कुर्बान किये गये इस्माईल पुत्र इब्राहीम अलैहिमस्सलाम की संतान में से थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस धरती के सबसे उच्च कुल एवं वंश से संबंध रखते थे, तथा हदीस में आया है कि हिरक़ल -रोम का राजा- ने अबू सुफ़ियान से कहा था: “मैंने तुमसे उसके वंश के संबंध में पूछा था ? तो तुमने बताया कि वह तुममें उच्च कुल से संबंध रखते हैं, रसूल ऐसे ही होते हैं वो अपनी समुदाय के सबसे उच्च कुल से संबंध रखते हैं”।</p>						
<p>आप का चयन</p>	<p>नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “अल्लाह तआला ने इस्माईल की संतान में से किनाना का चयन किया, तथा किनाना में से कुरैश का चयन किया, और कुरैश में से बनू हाशिम का चुनाव हुआ तथा बनू हाशिम में से अल्लाह तआला ने मुझे चुना”।</p>						
<p>आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम</p>	<p>आप के नाम सभी विशेषण हैं ये केवल नाम मात्र नहीं हैं जो सिर्फ पहचान का लाभ देते हैं, बल्कि ये आप में विद्यमान गुणों एवं विशेषताओं के यौगिक से निकले हुए नाम हैं जो आपके कामिल व पूर्ण होने तथा आपके लिए प्रशंसा को अपरिहार्य करते हैं, उनमें से कुछ नाम निम्नांकित हैं :</p> <table border="1" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td data-bbox="299 1163 385 1309" style="background-color: #e0e0ff; text-align: center; vertical-align: middle;"> <p>मुहम्मद</p> </td> <td data-bbox="385 1163 1168 1309"> <p>यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सुप्रसिद्ध नाम है, और इसी नाम के द्वारा स्पष्ट रूप से तौरात में आप का वर्णन हुआ है। और इसका अर्थ है: (ऐसे अनेक गुणों से सुसज्जित जिन पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा एवं सराहना की जाती है।</p> </td> </tr> <tr> <td data-bbox="299 1309 385 1467" style="background-color: #e0e0ff; text-align: center; vertical-align: middle;"> <p>अहमद</p> </td> <td data-bbox="385 1309 1168 1467"> <p>अर्थात: अल्लाह की मखलूक (रचना) में सर्वाधिक प्रशंसनीय, आपके अनेक गुणों के कारण आकाश वासी, धरती वासी तथा समस्त लोक एवं परलोक के वासी आपकी प्रशंसा करते हैं, और इसी नाम के द्वारा ईसा अलैहिस्सलाम ने आपका नामकरण किया है।</p> </td> </tr> <tr> <td data-bbox="299 1467 385 1656" style="background-color: #e0e0ff; text-align: center; vertical-align: middle;"> <p>अल-मुत्तवक़िल</p> </td> <td data-bbox="385 1467 1168 1656"> <p>इस नाम के द्वारा आपका नामकरण करने का कारण यह है कि धर्म को स्थापित एवं उसका प्रचार-प्रसार करने में आप अल्लाह तआला पर ऐसा तवक्कुल व भरोसा करते थे कि उस प्रकार का तवक्कुल आपके सिवा कोई अन्य नहीं कर सकता।</p> </td> </tr> </table>	<p>मुहम्मद</p>	<p>यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सुप्रसिद्ध नाम है, और इसी नाम के द्वारा स्पष्ट रूप से तौरात में आप का वर्णन हुआ है। और इसका अर्थ है: (ऐसे अनेक गुणों से सुसज्जित जिन पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा एवं सराहना की जाती है।</p>	<p>अहमद</p>	<p>अर्थात: अल्लाह की मखलूक (रचना) में सर्वाधिक प्रशंसनीय, आपके अनेक गुणों के कारण आकाश वासी, धरती वासी तथा समस्त लोक एवं परलोक के वासी आपकी प्रशंसा करते हैं, और इसी नाम के द्वारा ईसा अलैहिस्सलाम ने आपका नामकरण किया है।</p>	<p>अल-मुत्तवक़िल</p>	<p>इस नाम के द्वारा आपका नामकरण करने का कारण यह है कि धर्म को स्थापित एवं उसका प्रचार-प्रसार करने में आप अल्लाह तआला पर ऐसा तवक्कुल व भरोसा करते थे कि उस प्रकार का तवक्कुल आपके सिवा कोई अन्य नहीं कर सकता।</p>
<p>मुहम्मद</p>	<p>यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सुप्रसिद्ध नाम है, और इसी नाम के द्वारा स्पष्ट रूप से तौरात में आप का वर्णन हुआ है। और इसका अर्थ है: (ऐसे अनेक गुणों से सुसज्जित जिन पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा एवं सराहना की जाती है।</p>						
<p>अहमद</p>	<p>अर्थात: अल्लाह की मखलूक (रचना) में सर्वाधिक प्रशंसनीय, आपके अनेक गुणों के कारण आकाश वासी, धरती वासी तथा समस्त लोक एवं परलोक के वासी आपकी प्रशंसा करते हैं, और इसी नाम के द्वारा ईसा अलैहिस्सलाम ने आपका नामकरण किया है।</p>						
<p>अल-मुत्तवक़िल</p>	<p>इस नाम के द्वारा आपका नामकरण करने का कारण यह है कि धर्म को स्थापित एवं उसका प्रचार-प्रसार करने में आप अल्लाह तआला पर ऐसा तवक्कुल व भरोसा करते थे कि उस प्रकार का तवक्कुल आपके सिवा कोई अन्य नहीं कर सकता।</p>						





नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम	अल-माही	जिनके द्वारा अल्लाह तआला कुफ़्र को मिटाता है, और जिस प्रकार से आपके द्वारा अल्लाह तआला ने कुफ़्र को मिटाया उस प्रकार से किसी अन्य के द्वारा नहीं मिटा गया।
	अल-हाशिर	जिनके क्रदमों तले लोग इकट्ठा किये जायेंगे, तो मानो आप इसी लिये भेजे गये थे कि लोगों को हश्र में (महाप्रलय के पश्चात) इकट्ठा किया जाये।
	अल-आकिब	जिनके बाद कोई नबी नहीं है, अर्थात आप नबियों की श्रृंखला को समाप्त करके मोहर लगा देने वाले हैं।
	अल-मुक़फ़ी	जो अपने पूर्वजों के पदचिन्हों का अनुसरण करे, अर्थात अल्लाह तआला ने आप को पूर्व के रसूलों के पदचिन्हों का अनुसरण करने के लिये अवतरित किया।
	नबीयुतौबा	जिनके द्वारा अल्लाह तआला ने धरती वासियों के लिये तौबा का द्वार खोला था, एवं इस अधिकता के साथ लोगों के तौबा को स्वीकार किया कि इससे पूर्व इसकी मिसाल नहीं मिलती, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपना हाल यह था कि आप अन्य की तुलना में सबसे अधिक तौबा व इस्तिग़फ़ार (पश्चाताप एवं क्षमा याचना) करने वाले थे।
	नबीयुल मलहमा	जो अल्लाह के शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध लड़ने के लिये भेजे गये थे, जिस प्रकार का जिहाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा आपकी उम्मत ने किया उस प्रकार का जिहाद किसी भी नबी तथा उसकी उम्मत ने नहीं किया, और महा युद्ध जो आप के आने के पश्चात लड़े गए आप से पहले उसकी मिसाल नहीं मिलती।
	नबीयुर्रहमत	जिनको अल्लाह तआला ने समस्त लोक वासियों के लिये रहमत बना कर भेजा था, अतः आपके द्वारा समस्त धरती वासियों पर अल्लाह तआला ने कृपा किया, मोमिनों ने इसका एक बड़ा भाग पाया, तथा कुफ़ार में से अहले किताब उसकी छत्र-छाया में रहे, एवं उनके संधि एवं वचन के अंतर्गत जीवन यापन किया।
	अल-फ़ातेह	जिनके द्वारा अल्लाह तआला ने संकीर्ण हिदायत के द्वार को पूर्णरूपेण खोल दिया, तथा आप के द्वारा, अंधी आँख, बहरे कान एवं बंद हो चुके दिलों को खोल दिया, अल्लाह तआला ने आपको काफ़िरों के नगर पर प्रभुत्व दिया, आपके द्वारा ही जन्नत (स्वर्ग) का द्वार खोला जाएगा, और आप के द्वारा ही अल्लाह तआला ने लाभदायक ज्ञान एवं नेक अमल (सदकर्म) के द्वार को खोला।





नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम	अल-अमीन	इस नाम के द्वारा नामकरण के सर्वाधिक योग्य समस्त संसार में आप ही हैं, आप अल्लाह के दीन एवं वह्य (प्रकाशना, आकाशवाणी) के अमीन (विश्वासपात्र) हैं, आप जो धरती पर है उसके भी तथा जो आसमान में है उसके भी अमीन हैं, बल्कि कुरैश के काफिरों ने आपके रसूल बनाये जाने के पूर्व ही आप का नाम अमीन (अमानतदार) रख दिया था।
	बशीर	जिसने आज्ञापलन किया उसको सवाब व पुण्य की शुभ सूचना देने वाले तथा जिसने अवज्ञा किया उसको अज्ञाब व दंड की चेतावनी देने वाले हैं आप।
	आदम की संतान के सरदार	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “मैं क्रयामत के दिन नबियों का सरदार रहूँगा परंतु इस में अभिमान करने योग्य कोई बात नहीं”।
	अल-सिराज अल-मुनीर	जो बिना जलाये हुये दीप्त करने वाले तथा प्रकाश फैलाने वाले हैं, वहहाज (अत्यंत भड़कने वाला, ज्वलनशील) के विपरीत कि इसमें एक प्रकार से जलाते हुए दीप्त करने का अर्थ पाया जाता है।
<p>आप अब्दुल्लाह (अल्लाह के भक्त) हैं, आप भक्ति के अति विशिष्ट स्थान पर विराजमान हैं क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भक्ति के सभी मापदंड पर पूर्णरूपेण खड़े उतरते हैं।</p>		
नबी ﷺ के गुण संक्षिप्त रूप से	<p>आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सबसे पूर्ण व मुकम्मल खाका (रूपरेखा) स्वयं आपने खींचा है कि: “मैं मुहम्मद अल्लाह का बंदा और रसूल हूँ, मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे उस निश्चित स्थान से ऊपर उठा दो जहाँ अल्लाह तआला ने मुझे स्थापित किया है”।</p>	
	<p>आप चाहे शारीरिक रचना हो अथवा आचरण एवं स्वभाव, हरेक आधार पर सर्वोत्तम पुरुष थे, अल्लाह तआला का फरमान है: (निःसंदेह आपके आचरण एवं स्वभाव उच्च कोटि के हैं)। अल-कलम: ४, तथा आइशा रजियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि: “आपके शिष्टाचार वही हैं जो कुरआन है”, अर्थात आप उसके अनुसार कर्म करते हैं, उसकी तय सीमा को नहीं लांघते, अल्लाह की प्रसन्नता के लिये ही प्रसन्न होते हैं तथा उसकी अप्रसन्नता के लिये अप्रसन्न होते हैं।</p>	
आप की शारीरिक रचना एवं गुण	खलील-अल्लाह	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “अल्लाह तआला ने मुझे वैसे ही अपना खलील (धनिष्ठ मित्र) बना लिया है जिस प्रकार उसने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को खलील बनाया था”।
	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पवित्र शरीर	अनस रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रंग खिलता हुआ था” अर्थात आप ऐसे गोरे चिट्ठे थे जिसमें गुलाबी रंग का मिश्रण था, “आपका पसीना मोती के समान था, आप आगे की ओर झुक कर चलते थे, तथा मैंने किसी दीबाज” जोकि रेशम की अति उत्तम एवं उन्नत किस्म है “और न ही हरीर -सामान्य रेशम- को कभी छूआ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हथेली से अधिक नरम व मुलायम हो, न ही मैंने किसी मुश्क अथवा अंबर को सूंघा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शरीर की गंध से अधिक सुगंधित हो”।





नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शारीरिक रचना व गुण	आपका कद व डील-डाल	<p>बरा बिन आजिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : “नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरबूअ” अर्थात: मध्यम कद के थे “आप के दोनों कंधों के बीच चौड़ाई थी अर्थात आपकी छाती चौड़ी थी, आपके बाल आपकी कान पालि तक लटकती थी, मैंने आपको लाल वस्त्र धारण किये हुए देखा था उनसे अधिक सुंदर कोई चीज़ मैंने कभी नहीं देखा”।</p>
	आपकी मुखाकृति	<p>काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : “जब मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम किया तो ख़ुशी के कारण आपका चेहरा दमक रहा था, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब ख़ुश होते तो आपका मुख चमकने लगता मानो चाँद का टुकड़ा हो, और हम आपकी इस स्थिति को पहचान लेते थे”, और बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया: क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुख तलवार के समान था ? उन्होंने कहा: “नहीं, बल्कि चंद्रमा के समान था”।</p>
	आपके बाल	<p>अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : “नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ भरे-भरे थे, मैंने वैसा हाथ आपके बाद किसी का नहीं देखा, एवं आपके बाल सीधे लम्बे थे घुँघराले नहीं” अर्थात आपके बाल टेढ़े-मेढ़े और जटा के समान न थे “और न ही बिल्कुल सीधे थे” अर्थात बिल्कुल सपाट सीधे लटकते हुए भी नहीं थे।</p>
	आप की आँखें	<p>जाबिर बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं “आपका मुँह ज़लीअ था” अर्थात: कुशादा व चौड़ा “आपके चक्षु (आँख) सफेदी में लालिमा लिए हुए थे” तथा “आप की एड़ी कम मांस वाली हल्की थी”।</p>
	आप का पसीना	<p>अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: “नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे यहाँ आए तथा आपने हमारे पास क़ैलूला किया” अर्थात दोपहर में भोजन के पश्चात कुछ देर लेट गए “और आपके शरीर से पसीना निकलने लगा, तो मेरी माता जी एक बोतल ले कर आई तथा उस पसीना को एकत्र करने लगीं” अर्थात: आपके पसीना को उस बोतल में जमा करने लगीं “नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नींद से जाग गए और पूछा: हे उम्मे सुलैम, यह क्या कर रही हो ? तो उन्होंने उत्तर दिया कि आप का यह पसीना जब हम अपनी इत्रों में डालते हैं तो वह और भी सुगंधित हो जाता है, आपके पसीने की गंध सर्वाधिक सुगंधित है”।</p>
	नबूवत की मोहर	<p>नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोनों कंधों के बीच में नबूवत की मोहर लगी हुई थी, जोकि आपके शरीर में तिल के समान बिल्कुल स्पष्ट था। जाबिर बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: “मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कंधे के पास कबूतर के अंडे के समान नबूवत की मोहर छपी हुई देखी, जो आपके शरीर से मिलता-जुलता था”।</p>



सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम का आपके प्रति आदर-सम्मान	<p>अम्र बिन आस रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं : “मेरे निकट अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अधिक प्रिय कोई नहीं था न ही मेरी नज़र में उससे अधिक किसी के लिये आदर था, आपके आदर का यह हाल था कि मैं आपको आँख भर देख भी नहीं सकता था, यदि आप मुझसे कहें कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुलिया बयान करो तो यह मेरे लिए असंभव होगा क्योंकि मैंने जी भरकर कभी आपको देखा ही नहीं”।</p> <p>हुदैबिया के दिन उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी ने कुरैश के समक्ष नबी के संबंध में ब्योरा देते हुए कहा था: “अल्लाह की क्रसम, मैंने किसी राजा को नहीं देखा कि उसकी प्रजा उसका वैसा आदर करती हो जैसा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथी मुहम्मद का करते हैं, अल्लाह की क्रसम आप खखारते भी हैं तो वह खखार आपके साथियों में से किसी के हाथ में गिरता है जिसको वह अपने चेहरे तथा शरीर पर मल लेते हैं, जब आप कोई आदेश देते हैं तो अतिशीघ्र उसके पालन के लिए वो दौड़ कर आते हैं, जब आप वुजू करते हैं तो आपके वुजू का पानी लेने के लिए आपस में मारा-मारी होती है, जब आप बात करते हैं तो वो लोग अपनी आवाज़ नीची कर लेते हैं, और आपके आदर में आपकी ओर नज़र उठा कर जी भर कर देखते भी नहीं हैं”।</p>
अल्लाह का आदर	<p>अब्दुल्लाह बिन शिख़ीर रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: “हमने कहा आप हमारे सध्यद (सरदार, अधिपति) हैं, तो आपने फ़रमाया: सध्यद (सरदार) तो अल्लाह तबारक व तआला है, हमने कहा: आप हममें सबसे उत्तम तथा सबसे महान हैं, तो आपने फ़रमाया: (इसी प्रकार की) अपनी बातें बोलो -या इन जैसी कुछ बातें- और सावधान रहो कि शैतान कहीं तुम्हें अपने जाल में न फांस ले”</p>
वीरता	<p>अली रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं: “जब घमासान का रण पड़ता और एक गिरोह दूसरे गिरोह से युद्ध के लिये मिलता तो हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी ढाल बनाते थे, शत्रु की सेना के निकट आपसे अधिक कोई नहीं होता था”।</p>
अल्लाह से भय व डर	<p>आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “अल्लाह की क्रसम मैं तुम्हारे मध्य अल्लाह से सर्वाधिक भयभीत होने वाला तथा उसके लिए सर्वाधिक तक्रवा (इद्रियनिग्रह) अपनाने वाला हूँ”।</p>
अपने घरवालों के संग दयाभाव	<p>नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “तुममें सर्वोत्तम पुरुष वह है जो अपने घरवालों के लिये सबसे उत्तम हो, और मैं तुममें से सर्वाधिक अपने परिवार वालों के लिए उत्तम हूँ”।</p>
लज्जा	<p>अबू सईद ख़ुदरी रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घरों में रहने वाली कुंवारी लड़की से भी अधिक लज्जावान थे, आप जब कोई अप्रिय चीज़ देखते तो इसे हम आपके चेहरे के हाव-भाव से पता कर लेते थे”।</p>
आपका सरल	<p>मोमिनों की माताश्री आइशा रजियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि: “नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब दो चीज़ों के बीच चयन का अधिकार दिया जाता तो जो दोनों में सरलतम होता आप उसे चुनते थे बशर्ते कि उसमें गुनाह न हो, और यदि वह सरलतम चीज़ गुनाह आधारित होती तो आप सर्वाधिक गुनाह से बचने वाले थे”।</p>



<p>नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आचरण व स्वभाव</p>	<p>अपने लिये इतकाम नहीं लेते थे</p>	<p>आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: “अल्लाह की क्रसम आपने अपने लिये कभी किसी से इतकाम (प्रतिशोध) नहीं लिया परंतु जब अल्लाह के तय किए हुए सीमाओं का उल्लंघन होने लगता तो फिर आप इतकाम लेते”।</p>
	<p>आप खाना को दोष नहीं देते थे</p>	<p>आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि: “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी खाने में दोष नहीं निकाला, यदि चाहत होती तो खा लेते और यदि नापसंद करते तो छोड़ देते”।</p>
	<p>आप उपहार स्वीकार करते थे</p>	<p>आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: “अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उपहार स्वीकार करते थे और उसका बदला भी दिया करते थे”।</p>
	<p>आप सदका (दान) नहीं लेते थे</p>	<p>नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं मुहम्मद के वंशज एवं ख़ानदान के लोग सदका नहीं खाते हैं”।</p>
	<p>आपका विनम्रता</p>	<p>उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: “नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक व्यक्ति लाया गया जिससे आपने बात किया तो भय के मारे वह काँपने लगा, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे कहा: शांत हो जाओ, मैं कोई बादशाह नहीं हूँ, मैं भी एक ऐसी महिला का पुत्र हूँ जो धूप में सुखाए हुए मांस का भक्षण करती थी”।</p>
	<p>अपने परिवार वालों की सहायता करना</p>	<p>असवद बिन यज़ीद रहिमुल्लाह कहते हैं कि: मैंने आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से प्रश्न किया: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर में क्या करते थे ? तो उन्होंने बताया कि: “आप अपने घर वालों का काम में साथ दिया करते थे, और जब नमाज़ का समय होता तो आप नमाज़ के लिये निकल जाते”।</p>
	<p>अज्ञानियों से दूरी अपनाना</p>	<p>नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “क्या तुम लोगों को आश्चर्य नहीं होता है कि कैसे अल्लाह तआला ने कुरैश के गाली गलोज़ को मुझ से दूर कर दिया? वो किसी निंदनीय व्यक्ति को “मुज़म्मम” कह कर गाली देते एवं धिक्कारते हैं, जबकि मैं मुहम्मद (प्रशंसनीय व सराहनीय) हूँ”</p>
	<p>आपकी सच्चाई</p>	<p>अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हम से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान किया और आप सच्चे थे जिसकी सच्चाई सर्वविदित थी।</p>
	<p>अपने सेवकों के संग आपका व्यवहार</p>	<p>अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: “मैंने दस वर्ष तक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा की, अल्लाह की क्रसम आपने कभी मुझ से उफ़्फ़ भी नहीं कहा, और न ही कभी जो मैंने किया उसके लिये पूछा कि: तुमने ऐसा क्यों किया? और न ही कभी जो मैंने नहीं किया उसके लिए पूछा कि: तुमने ऐसा क्यों नहीं किया?”</p>





नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आचरण व स्वभाव

अपने साथियों के बीच आप स्वयं को विशिष्ट स्थान नहीं देते थे और आप का हृदय बड़ा उदार था

अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं : “हम लोग मस्जिद में बैठे हुए थे कि एक व्यक्ति ऊँट पर सवार हो कर आया, ऊँट को मस्जिद में बैठाया (कुछ रिवायतों में मस्जिद के द्वार पर ऊँट बांधने का भी वर्णन है) और उसको बांधने के पश्चात पूछा: तुम में से मुहम्मद कौन हैं? जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों के बीच टेक लगा कर बैठे हुए थे, वह कहते हैं : हमने कहा: यह श्वेत आदमी जो टेक लगाकर बैठे हैं, तो उस व्यक्ति ने आपसे कहा: हे अब्दुल मुत्तलिब के पुत्र, तो रसूलुल्लाह ने उससे कहा: मैंने तुम्हारा उत्तर दे दिया है (अब आगे बोलो), उस व्यक्ति ने कहा: हे मुहम्मद मैं आप से कुछ पूछने वाला हूँ तथा इसमें कठोरता से काम लूँगा अतः आप अपने दिल में मेरे लिये कोई बदगुमानी नहीं रखियेगा, तो रसूलुल्लाह ने फ़रमाया: जो कुछ पूछना है पूछो, तो उस व्यक्ति ने कहा: मैं आप को आपके रब तथा आप से पहले लोगों के रब की क्रसम देता हूँ, क्या अल्लाह ने आप को समस्त संसार के लोगों के लिये रसूल (संदेश) बना कर भेजा है? आपने फ़रमाया: हाँ बिल्कुल, तो उसने कहा: मैं आप को अल्लाह की क्रसम देकर पूछता हूँ कि क्या अल्लाह ने आपको यह आदेश दिया है कि हम दिन व रात में पाँच समय नमाज़ पढ़ें? आप ने फ़रमाया: हाँ बिल्कुल, फिर उसने कहा: मैं अल्लाह की क्रसम देकर आप से पूछता हूँ कि: क्या अल्लाह ने साल के इस (रमज़ान) महीना का रोज़ा रखने का आप को आदेश दिया है? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हाँ बिल्कुल, पुनः उस व्यक्ति ने पूछा: मैं अल्लाह की क्रसम देकर आप से पूछता हूँ कि: क्या अल्लाह ने आप को इस बात का आदेश दिया है कि यह सदक़ा (जकात) हमारे धनवानों से ले कर हमारे ही निर्धनों में बाँट दिया जाए? रसूलुल्लाह ने फ़रमाया: हाँ बिल्कुल, तो उस व्यक्ति ने कहा: आप जो लेकर आए हैं मैं उस पर इमान लाता हूँ, और मैं अपने समुदाय का प्रतिनिधि हूँ, मैं बनू साद बिन बकर क़बीला का ज़िमाम बिन स़ालबा हूँ।

आपका खान-पान

आइशा रजियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: “मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घरवाले कभी पेट-भर कर दो दिन तक लगातार जौ की रोटी नहीं खा सके यहाँ तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्राण पखेरू उड़ गए।”

सांसारिक मोहमाया से दूरी

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “मुझे यह बात पसंद नहीं है कि मेरे पास उहुद पहाड़ के समान सोना हो और उस पर तीन दिन व्यतीत हो जाने के पश्चात मेरे पास उस में से एक दिरहम भी बच जाए, हाँ यदि क़र्ज़ (ऋण) के लिए बच जाए तो बात दूसरी है, परंतु मैं कहूँगा कि अल्लाह के अमूक बंदे के लिए इतना, और अमूक के लिए इतना इतना।” अर्थात् अपने लिए कुछ भी नहीं रखूँगा।

आपने कभी गाली नहीं दी

आइशा रजियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि: “आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न तो अश्लील थे और न ही गाली-गलौज करने वाले थे, न ही बाज़ारों में जा कर हुल्लड़ मचाने वाले थे, और न ही आप बुराई का बदला बुराई से देते थे, बल्कि आप क्षमा करने वाले, अनदेखी एवं माफ़ कर देने वाले थे।”

आपने कभी किसी अन्य महिला के हाथ का स्पर्श नहीं किया

आइशा रजियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि: “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी भी किसी अन्य व अजनबी महिला का हाथ नहीं छुआ।”





नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आचरण व स्वभाव

आपका सादा घर, सांसारिक मोहमाया से दूरी एवं सादा जीवन यापन

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि: मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया जबकि आप एक चटाई पर लेटे हुए थे तो मैं बैठ गया, आपने अपनी लुंगी समेट कर रख ली और आप के पास उस के सिवाय और कोई वस्त्र न था, लेटे होने के कारण चटाई का निशान आपकी पीठ पर आ गया था, मेरी दृष्टि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर के आवश्यक साजो सामान पर पड़ी तो देखा कि मुट्ठी भर लगभग एक साअ (एक प्रकार का माप) के समान जौ पड़ा हुआ था, और उसी के समान कीकर (बबूल की फली) घर के एक कोने में पड़ा हुआ था, और ऊपर एक चमड़े का मशकीज़ा लटका हुआ था। वह कहते हैं: यह देख कर मेरी आँखों में आँसू आ गए, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा: “हे खत्ताब के पुत्र, क्या चीज़ तुझे रुला रही है?” मैंने कहा: हे अल्लाह के नबी, मैं क्यों न रोऊँ कि इस चटाई ने आपके पहलु में अपना निशान छोड़ दिया, और आप का जो साजो सामान है वह तो मैं देख ही रहा हूँ और जबकि यह कैसर व किसरा (रोम व फ़ारस वाले) हरे-भरे बाग़ एवं नदियों के बीच अपना जीवन ठाठ से व्यतीत कर रहे हैं, और आप जो अल्लाह के रसूल एवं उसके चयनित सबसे उत्तम बंदा हैं आपके साजो सामान का यह हाल है ? तो आपने फरमाया: “हे खत्ताब के पुत्र क्या तुम इससे प्रसन्न नहीं हो कि उन लोगों के लिए दुनियाँ हो और हमारे लिए आख़िरत हो ?” मैंने कहा: क्यों नहीं।





प्रथम परीक्षा

सत्य	असत्य	प्रश्न:
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	☀ लोक एवं परलोक में बंदे का सौभाग्य नबी ﷺ के तरीकों का अनुसरण करने में है
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	☀ रसूल अपनी क्रौम के कुलीनतम वंश से होते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	☀ आपका सबसे पूर्ण ब्योरा स्वयं आपने दिया है कि: “मैं अल्लाह का बंदा व उसका रसूल हूँ” ।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	☀ हरीर और दीबाज (रेशम के प्रकार) नबी ﷺ की हथेली से अधिक मुलायम थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	☀ अल्लाह ने अपने नबी के शिष्टाचार तथा आचरण व स्वभाव अति उच्च कोटि के बनाए हैं, और आपको ज्ञान, प्रधानता और जिसमें लोक एवं प्रलोक में सफलता, सौभाग्य एवं मुक्ति है वह सब इस प्रकार से दिया है जिस प्रकार से आपके पूर्व किसी को नहीं दिया गया।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	☀ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्मी हैं जो न पढ़ना जानते थे न लिखना, और न ही किसी इंसान ने आपको कुछ सिखाया

☀ सभी धरती वासियों में सबसे उच्च कूल के हैं : युनुस बिन मत्ता ﷺ मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ﷺ

☀ आपके नाम: सभी विशेषताएं हैं यह मात्र नाम भर हैं जो केवल परिचय बताते हैं ऐसे गुणों के यौगिक से बना है जो आपके पूर्ण होने एवं आपके लिए प्रशंसा को वाजिब बनाते हैं समस्त केवल पहला व तीसरा

☀ **“आप का आचरण मानो कुरआन ही था”** अर्थात: उसी की प्रसन्नता के लिए प्रसन्न होते थे उसी की अप्रसन्नता के लिए अप्रसन्न होते थे समस्त

☀ खलीलुल्लाह हैं : इब्राहीम अलैहिस्सलाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सभी

☀ **“रसूलुल्लाह का रंग खिलता हुआ था”** अर्थात: गेहूँआ गोरा अत्यंत गोरा

☀ सर्वाधिक सुगंधित सुगंध: मुश्क है नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पसीना है

☀ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरबूअ थे, अर्थात: मध्यम क्रद के थे लम्बे क्रद के थे

☀ आपके नबूत की मोहर: दोनों कंधे के बीच थी आपके शरीर से मिलती जुलती थी कबूतर के अंडे के समान थी सभी

कुरैश से	इस्माईल	बनू हाशिम से	किनाना	अल्लाह ने चुना
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	किनाना को . . . की संतान में
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	कुरैश से
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	बनू हाशिम से
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अपने नबी को





सकरदादा का नाम	नकरदादा का नाम	परदादा का नाम	दादा का नाम	पिता का नाम	आपका नाम	आपकी वंशावली
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	हाशिम
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अब्दुल मुत्तलिब
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अब्दुल्लाह
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	मुहम्मद
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इस्माईल
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इब्राहीम

अल-सिराज	अल-आक्रिब	अहमद	मुहम्मद	प्रत्येक नाम को उसकी व्याख्या से मिलाएं
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अल्लाह की सर्वाधिक प्रशंसा करने वाला
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जो बिना जलाए प्रकाश देता है
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अत्याधिक प्रशंसनीय गुणों से लैस
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आपके बाद कोई नबी नहीं, अर्थात आप मोहर के समान हैं

डरने वाले	आचरण एवं डील-डोल वाले	जीवन-यापन के आधार पर	गंध के आधार पर	हाथ के आधार पर	आप ﷺ थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	लोगों में सर्वोत्तम
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	सर्वाधिक मुलायम
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	सर्वाधिक सुगंधित
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	सबसे अच्छे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	सर्वाधिक

उपहार को	सदका (ज़कात) को	अपने लिए	खाने को	अल्लाह के लिए	आप ﷺ
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इंतक़ाम नहीं लेते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इंतक़ाम लेते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	कभी दोष नहीं दिया
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	स्वीकार करते एवं उसका बदला चुकाते
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	स्वीकार नहीं करते थे





नबी ﷺ की सीरत

आपके वस्त्र धारण करने एवं खान-पान का ढंग	आपका प्रिय रंग	आपका सबसे प्रिय रंग सफेद था, और आपने फरमाया: “यह तुम्हारे रंगों में से सर्वश्रेष्ठ रंग है, अतः इसे पहना करो तथा इसी रंग में अपने मुर्दों व मृतकों को दफनाओ”।
	आपका वस्त्र	जो भी वस्त्र मयस्सर होता आप उसे धारण करते, कभी ऊनी, तो कभी कॉटन और कभी लेनिन का, और जब आप कमीज पहनते तो दाहिनी ओर से पहनना आरंभ करते।
	आपका संतुलित वस्त्र धारण करना	कुछ सलफ़ (नेक पूर्वजों) का कहना है कि: (सलफ़ सालेहीन प्रसिद्धि वाले दो प्रकार के वस्त्र को मकरूह व अप्रिय समझते थे सर्वोत्तम तथा अत्यंत घटिया), और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस में है: “जिसने प्रसिद्धि वाला वस्त्र धारण किया उसे अल्लाह तआला क्रयामत के दिन अपमान वाला वस्त्र पहनाएगा फिर उसमें आग भड़क उठेगी” क्योंकि इसका धारण उसने अहंकार, गर्व एवं अभिमान के लिए किया था अतः अल्लाह तआला ने उसकी सोच के विपरीत चीज़ के द्वारा उसे दंड दिया, इस प्रकार की एक और रिवायत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ही से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “जो अपने कपड़े को घमंड के कारण घसीटते हुए चलता है क्रयामत के दिन अल्लाह तआला उसे (रहमत व कृपा की दृष्टि से) नहीं देखेगा” ।
	आपका भोजन	जो आपके समक्ष उपलब्ध होता उसमें ना नुकुर करते हुए उसको लौटाते नहीं थे और जो नहीं होता उसके लिए तकल्लुफ़ भी नहीं करते थे, जब भी आपके सामने कोई खाना रखा गया आपने उसमें से खाया, सिवाय ऐसी चीज़ के जिसको आपकी रूह नापसंद करती थी तो उसे हराम करार दिए बिना छोड़ देते थे, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि “आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी खाने में दोष नहीं निकाला, यदि चाहत होती तो खाते अन्यथा छोड़ देते”, जैसे आपने गोह (गोयरा) नहीं खाया क्योंकि यह आपके यहाँ नहीं पाया जाता था।
	भोजन करते का ढंग	<ul style="list-style-type: none"> - अधिकतर आपका खाना भूमि पर दस्तरख्वान में रखा जाता। - आप तीन उँगलियों से भोजन करते थे। - आप टेक लगा कर भोजन नहीं करते थे। - भोजन के आरंभ में “बिस्मिल्लाह” कहते तथा अंत में “अलहम्मुलिल्लाह” कहते। - जब आप खाने से फ़ारिग होते तो अपनी उँगलियों को चाटते थे।
	आप का पानी पीना	<ul style="list-style-type: none"> - अधिकतर आप बैठ कर पानी पिया करते थे, बल्कि आपने खड़े होकर पानी पीने वाले को डांटा-फटकारा है तथा खड़े होकर पानी पीना उसी समय जायज़ है जब कोई ऐसी विवशता हो जिसके सबब बैठने में असुविधा होती हो। - जब आप पानी पी लेते तो उसके बाद उसे देते जो आपके दाहिनी ओर होता यद्यपि आपके बाईं ओर क्रौम के बड़े लोग ही क्यों न बैठे हों।





- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “तुम्हारी दुनियाँ में दो चीज़ें मुझे सर्वाधिक प्रिय हैं : महिलाएं एवं सुगंध, तथा मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में बनाई गई है”।
- आप अपनी सभी धर्म पत्नियों के बीच रात बिताने, घर एवं ठिकाना तथा दैनिक जीवन-यापन का खर्चा देने में बराबरी एवं समरसता का ध्यान रखते थे।
- आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि: “जब आप यात्रा का इरादा करते तो अपनी पत्नियों के बीच कुरआ अंदाज़ी करते तथा जिनका नाम आता वह आपके साथ यात्रा में जातीं एवं शेष के लिये आप आपत्ति का कोई रास्ता नहीं छोड़ते थे”।
- अपनी पत्नियों के संग आपकी सीरत यह थी कि आप उनके संग अच्छा व्यवहार करते थे और शिष्टाचार का ध्यान रखते थे।
- आप आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पीछे-पीछे आते जहाँ वह अंसार की बालिकाओं के साथ खेला करती थीं, और जब वह किसी ऐसी चीज़ की इच्छा जतातीं जो शर्ई रूप से वर्जित न होता तो आप उनकी इच्छा पूर्ति करते।
- आप उनकी गोद में सिर रख कर टेक लगाए हुए कुरआन का पाठ करते और यदा-कदा ऐसा भी होता कि उन्हें माहवारी आ रही होती।
- जब उन्हें माहवारी आ रही होती तो आप उन्हें तहबंद बांधने का आदेश देते फिर आप उनके साथ मुबाशरत (अर्थात् मैथुन के सिवा आलिंगन इत्यादि) करते।
- आप रोज़े की हालत में भी अपनी पत्नियों का चुंबन लिया करते थे।
- अपने परिवार के लोगों के प्रति कृपा एवं दयालुता का यह हाल था कि आप उन्हें खेलने देते, तथा दो बार आपने उनके संग दौड़ प्रतियोगिता की तथा एक बार घर से बाहर निकलने में उनके संग प्रतिस्पर्धा किया।
- जब आप यात्रा से लौट कर आते तो रात्रि में अपने घर का द्वार नहीं खटखटाते थे और दूसरों को भी ऐसा करने से रोकते थे।

- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सोने के लिए बिस्तर पर आते तो यह दुआ पढ़ते: “बिस्मिका अल्लाहुम्मा अहया व अमूत (ऐ अल्लाह मैं तेरे ही नाम से जीता व मरता हूँ)” एवं “प्रत्येक रात्रि जब आप बिस्तर पर आते तो अपनी हथेलियों को मिलाते, तत्पश्चात् उसमें फूँक मारते तथा ये सूरतें पढ़ते: ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ और ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾ और ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ फिर जहाँ तक आपका हाथ पहुँचता यथा संभव अपने शरीर पर फेरते, अपने सिर, मुख तथा शरीर के अगले भागों से आरंभ करते, ऐसा आप तीन बार करते”, तथा “जब आप सोने का इरादा करते तो अपने दाहिने हाथ को अपने गाल के नीचे रखते, फिर यह दुआ पढ़ते: अल्लाहुम्मा क़िनी अज़ाबका यौम तबअसु इबदाका (हे अल्लाह जिस दिन तू अपने बंदों को दोबारा उठाएगा उस दिन मुझे अपने दंड से बचा के रखना)” और आप जब निद्रा से जागते तो यह दुआ पढ़ते: “अल्हमदुलिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बाद मा अमातना व इलैहिन्नुशूर (समस्त प्रकार की प्रशंसाएं उस अल्लाह के लिए है जिसने हमें मृत्यु पश्चात् पुनः जीवित किया और अंत में हमें उन्हीं की ओर लौट कर जाना है)”, फिर आप मिस्वाक (दातून) करते।
- आप रात्रि के प्रथम भाग में सो जाते तथा अंतिम भाग में जाग कर क़याम करते अर्थात् नमाज़ें पढ़ते और यदा-कदा मुसलमानों के हित के लिए रात्रि के प्रथम भाग में जाग कर भी रहते।
- आपकी आँखें सोती थीं किंतु दिल जागता रहता था।
- जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सो रहे होते तो लोग आप को जगाते नहीं थे यहाँ तक कि आप स्वयं जाग जाएं।
- आपकी निद्रा सबसे संतुलित निद्रा होती थी, और यही ढंग निद्रा के लिए सर्वाधिक लाभदायक है।



दूसरों के संग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का व्यवहार

- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हास्य-विनोद किया करते थे किंतु प्रहास के समय भी आप सच ही बोलते थे।
- आप तौरिया किया करते थे और इस तौरिया में भी सच ही बोला करते थे। (तौरिया कहते हैं सांकेतिक शब्दों के प्रयोग को, अर्थात् ऐसे वाक्य जिनका प्रत्यक्ष अर्थ कुछ हो एवं अप्रत्यक्ष कुछ और)।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मशविरा व परामर्श देते भी थे और लेते भी थे।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोगियों का हाल-चाल पूछने के लिए जाते, जनाजा में उपस्थित होते, न्योता स्वीकार करते, एवं विधवाओं, निर्धनों, दुर्बलों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आप सदैव तत्पर रहते।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी प्रशंसा में कही गई कविताओं का श्रवण करते और उस पर उपहार भी देते, आपकी जो भी प्रशंसा व सराहना की गई है वो सब आपमें विद्यमान खूबी व अच्छाई का अंश मात्र हैं, परंतु आपके सिवा अन्य लोगों की जो प्रशंसा की जाती है उसमें अधिकतर झूठ की मिलावट होती है।
- आप अपने जूते स्वयं गाँठ लेते और कपड़ों में पैबंद लगा लेते, अपने डोल की मरम्मत कर लेते, दूध दूह लेते, अपने कपड़ों से जूँ निकाल लेते, परिवार वालों की एवं स्वयं अपनी सेवा करते, तथा सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के संग मस्जिद बनाने के लिए ईंट उठाते थे।
- कभी भूख के मारे आप अपने पेट पर पत्थर बाँध लेते और कभी पेट-भर खाना मिल जाता।
- आप अतिथि भी बनते और अतिथेय भी बनते (मेहमानी और मेजबानी दोनों करते)।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सिर के मध्य में, पाँव के ऊपरी भाग पर, कण्ठ की नस (ग्रीवा शिरा) में एवं गर्दन के ऊपरी भाग (स्कंध) में पछना (सीधी) लगवाया।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उपचार किया, आग से दागा किंतु किसी से स्वयं को दागने के लिए नहीं कहा, आपने दम (झाड़-फूँक) किया किंतु किसी से स्वयं पर दम (झाड़-फूँक) करने के लिए नहीं कहा, तथा रोगियों को कष्टदायक चीजों से बचाया।
- व्यावहारिक रूप से आप सर्वोत्तम पुरुष थे, और जब आप कर्ज़ लेते थे तो कर्ज़ (ऋण) को अच्छे ढंग से लौटाते थे।

आप के चलने का ढंग

- आप सबसे तेज़, सबसे उत्तम तथा सबसे संतुलित चाल चलने वाले थे।
- आप अपने साथियों में सबसे तेज़ चलते थे यहाँ तक कि अन्य लोगों को आपके साथ-साथ चलने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता था।
- और आप कभी नंगे पाँव तो कभी जूता पहन कर चलते थे।
- सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम आपके आगे और उन सब के पीछे चलते थे।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा के साथ अकेले भी और समूह में भी चलते थे।

अल्लाह के स्मरण का ढंग

आप सर्वाधिक पूर्ण रूप से अल्लाह तआला का स्मरण व जिक्र करने वाले थे, बल्कि आपका सारा वार्तालाप ही अल्लाह के जिक्र से ओत-प्रोत होता था।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नींद से जागते तो अल्लाह का जिक्र करते, जब नमाज़ प्रारंभ करते, जब घर से निकलते, एवं जब मस्जिद में प्रवेश करते समय, भोर-सांझ, वस्त्र धारण करते समय, घर से निकलते और प्रवेश करते समय, शौचालय में घुसते समय, वुजू के पूर्व एवं पश्चात्, जब अज्ञान सुनते, जब चाँद देखते समय, खाने के पहले और बाद में एवं छींकते समय हर समय आप अल्लाह तआला का स्मरण करते रहते थे।



फितरती एवं नैसर्गिक व प्राकृतिक सुन्तों तथा उससे संबंधित चीजें	सुन्तों की गणना	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “दस चीजें फितरत (नैसर्गिकता) में से हैं: मूँछ काटना, दाढ़ी बढ़ाना, मिस्वाक करना, नाक में पानी डालना, नाखुन काटना, उँगलियों के जोड़ को धोना, काँख का बाल उखाड़ना, पेड़ू (जघवास्थि) के बाल काटना तथा इस्तिंजा (मल-मूत्र त्याग के पश्चात जल प्रयोग) करना” और रिवायत करने वाले दसवीं बात भूल गए।
	दावों को पसंद करना	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जूता पहनने, कंधी करने, पाकी हासिल करने, लेने देने में दाहिनी ओर से आरंभ करना पसंद था, खान-पान तथा पाक होते समय आप दाहिनी ओर से प्रारंभ करते थे जबकि शौचालय तथा इसी के समान जैसे गंदगी को दूर करते समय बाएं ओर से आरंभ करते थे। (अर्थात बाएं हाथ का प्रयोग करते थे)।
	सिर मूंडना	सिर मूंडने में आपका तरीका यह था कि आप या तो पूरा मूंडते या पूरा छोड़ देते।
	मिस्वाक	दातून करना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अत्यधिक प्रिय था, रोज़े की स्थिति हो अथवा बिना रोज़े की प्रत्येक स्थिति में आप दातून करते थे, नींद से जागने के पश्चात, वुजू के समय, नमाज़ के समय, घर में प्रवेश करते समय आप मिस्वाक करते थे, और आप दातून के रूप में पीलू की लकड़ी का प्रयोग करते थे।
	सुगंध	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुगंध अत्यंत प्रिय था और आप इसका अत्यधिक प्रयोग किया करते थे।
	दाढ़ी व मूँछ	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मुश्रिकीन का विरोध करो इस प्रकार से कि दाढ़ी बढ़ाओ तथा मूँछ छोटी करो।
	समय सीमा	अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: “नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे लिए मूँछ तथा नाखुन काटने की समय सीमा चालीस दिन तय की थी कि इससे अधिक दिनों तक हम इसे न छोड़ें”।
	बोल-चाल का ढंग ...	- आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि: “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम लोगों के समान जल्दी-जल्दी बात नहीं करते थे बल्कि आप बिल्कुल स्पष्ट रूप से ठहर-ठहर कर बात करते थे जिसको मज्लिस में बैठने वाला व्यक्ति याद कर सकता था”। - आप अधिकतर अपनी बात तीन बार दोहराते थे ताकि अच्छे से समझ में आजाए, और जब आप सलाम करते तो तीन बार सलाम करते। (अर्थात अनुमति लेने वाला सलाम)। - बिना आवश्यकता के आप बात नहीं करते थे, और जब बात करते तो “जवामे अल-कलिम” करते अर्थात आपके कम शब्दों में अनेक अर्थ छुपे हुए होते। - जिससे आपका संबंध नहीं होता था आप वो बात नहीं करते थे, और वही बात करते थे जिस पर सवाब (पुण्य) मिलने की आशा हो। - आप अश्लील नहीं थे न ही गाली-गलौच करने वाले थे और न ही हुल्लड़ मचाने वाले थे।





आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बोलने-चालने, हंसने-रोने तथा भाषण देने का ढंग	आपका हंसना	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हंसना यह था कि आप सदा बस मुस्कुराते रहते थे, और अधिक से अधिक जो आपका हंसना होता था वह यह कि आप के दाढ़ प्रकट हो जाते।
	आप का रोना	<ul style="list-style-type: none">- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिसकी ले कर तथा ज़ोर-ज़ोर से नहीं रोते थे किंतु आपकी आँखों में आंसू (अश्रु) आ जाते यहाँ तक कि वह बाहर निकल जाता, और आप के सीने से बर्तन के जोश मारने के समान आवाज़ आती थी।- आपका रोना कभी मृतक पर दया के कारण होता, कभी अपनी उम्मत पर डर एवं ममता के कारण, तो कभी अल्लाह के भय से और कभी कुरआन सुनते समय।
	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भाषण (खुत्बा) का अंदाज़	<ul style="list-style-type: none">- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भूमी पर भी, मंच (मिंबर) पर भी तथा ऊँट एवं ऊँटनी सभी पर चढ़ कर खुत्बा (भाषण) दिया है।- जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब खुत्बा देते तो आपकी आँखें लाल हो जातीं, आवाज़ ऊँची हो जाती तथा गुस्सा बढ़ जाता, ऐसा प्रतीत होता मानो आप किसी सेना से डरा रहे हैं”।- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब भी कोई भाषण देते तो उसे सर्वप्रथम अल्लाह तआला की प्रशंसा एवं सराहना से आरंभ करते।- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब देखते कि लोगों को खुत्बा की आवश्यकता है एवं उनका का हित इसमें निहित है तो किसी भी समय आप खुत्बा (भाषण) दे दिया करते थे।



द्वितीय परीक्षा

गलत	सही	प्रश्न:
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आप जब क़मीज़ पहनते तो दाहिने ओर से प्रारंभ करते
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का खाना अधिकतर भूमि पर दस्तरख्वान बिछा कर रखा जाता था और यही आपका माइदा (खाना परोस तालिका) होता था।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जब आप यात्रा से वापस आते तो रात्रि के समय अपने घर का दरवाज़ा नहीं खटखटाते थे और दूसरों को भी ऐसा करने से रोकते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	कभी भूख के कारण आप अपने पेट पर पत्थर बांध लेते थे और कभी पेट-भर भोजन भी मिल जाता था
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आप ने उपचार किया है और आग से दागा भी है किंतु स्वयं को आग से दागने के लिए किसी से नहीं कहा, आपने दम (झाड़-फूंक) किया है किंतु किसी को अपने ऊपर दम करने के लिए नहीं बोला
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा कुछ भी नहीं किया जैसा आज कल वसवसा व शंका ग्रस्त लोग करते हैं, जैसे मूत्र विसर्जन वाले रास्ते पर हाथ फेरना ताकि पूर्णरूपेण मूत्र विसर्जित हो जाए, खांसना, उछल-कूद करना, रग पकड़ना, सीढ़ी पर चढ़ना, शिश्र में रूई डालना, उसपर पानी बहाना, हर कुछ देर के पश्चात चेक करते रहना, तथा इस जैसी और बिदअतें जिसको इन शंका ग्रस्त लोगों ने ईजाद कर रखा है
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आप आसान दीन -ए- हनीफ़ देकर भेजे गए थे, एवं इसके विरुद्ध हैं: शिर्क तथा हलाल को हराम करना
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आप की सात संतान हैं : चार पुत्रि तथा तीन पुत्र
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आपकी सभी संतान खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से हैं, उनके अतिरिक्त किसी और से आपको कोई संतान नहीं है
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभी संतान आप से पहले मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इसमें कोई दो राय नहीं कि आप नौ पत्नियों को छोड़ कर मरे थे: आइशा, हफ़सा, ज़ैनब बिनते जहश, उम्मे सलमा, सफ़ीय्या, उम्मे हबीबा, मैमूना, सौदा, जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हुन्न
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए अल्लाह तआला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम के हाथों सलाम भेजा था, और यह ऐसी विशेषता है जो खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा सिवा किसी और को नहीं प्राप्त हुई

आपका सर्वाधिक प्रिय रंग था: सफेद काला जो रंग भी उपलब्ध हो

आपका वस्त्र होता था: ऊनी कपड़ा नहीं कॉटन तथा लेनिन जो भी वस्त्र उपलब्ध होता धारण कर लेते
केवल प्रथम एवं द्वितीय

आपका वस्त्र होता था: अत्यंत महंगा अत्यंत घटिया, जुहद (इंद्रिय-निग्रह) के कारण मध्यम दर्जे का



- ☀ आप बिस्मिल्लाह कहते तथा अल्लाह की प्रशंसा करते थे: भोजन के आरंभ में अंत में आरंभ एवं अंत में
- ☀ आप अधिकतर पानी पीते थे: बैठ कर खड़े हो कर दोनों
- ☀ नबी ﷺ ने फरमाया: “मुझे तुम्हारी दुनियाँ में से दो चीजें अत्यंत प्रिय हैं”: महिला सुगंध दोनों
- ☀ नबी ﷺ ने फरमाया: “मेरी आँखों की ठंडक बनाई गई है”: जन्नत में नमाज़ में समस्त
- ☀ नबी ﷺ अपनी पत्नियों के संग अच्छा: व्यवहार करते थे आचरण समस्त
- ☀ अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: “नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे लिए मूँछ तथा नाखून काटने के लिए ... दिन का समय सीमा तय कर दी थी”: तीस चालीस पचास
- ☀ सिर मुंडाने में आप ﷺ का तरीका यह था कि: कुछ मुंडाते कुछ छोड़ देते या तो पूरा मुंडाते या पूरा छोड़ देते
- ☀ आप मिस्वाक करना पसंद करते थे, तथा आप मिस्वाक करते थे: रोज़ा की हालत में बिना रोज़ा के भी समस्त
- ☀ आप का हंसना: सदा केवल मुस्काना भर होता था अधिकतर मुस्काते थे
- ☀ आप भेजे गए थे: समस्त लोगों के लिए इंसान तथा जिन्नों के लिए
- ☀ निर्विवाद रूप से आपकी सबसे अफ़ज़ल व उत्तम पुत्री हैं: फ़ातिमा ज़ैनब सभी
- ☀ आपकी इस पत्नी के अतिरिक्त किसी और के रज़ाई में होते हुए आप पर बह्य (प्रकाशना) नहीं उतरी: हफ़सा उम्मे सलमा आइशा

रोगी का	विधवाओं, निर्धनों तथा दुर्बलों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए	न्योता	जनाज़ा में	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	हाल-चाल पूछते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	उपस्थित होते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	स्वीकार करते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	सदैव तत्पर रहते थे

अपनी व अपने घरवालों की	अपने हाथों अपने जूते को	अपने हाथों अपने कपड़ा में	मस्जिद बनाने के लिए ईंट	बकरी का	आप ﷺ के कर्म
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	गाँठ लेते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	पैबंद लगा लेते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	दूहते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	सेवा करते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	दोते थे





मूँछ	दाढ़ी	पेडू	काँख	नाखुन	फितरत में से है
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	काटना
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	बढ़ाना
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	काटना
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	उखाड़ना
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	मूँडना

उपलब्ध को	बिना हराम करार दिए छोड़ देते थे	मगर खा लेते थे	अनुपलब्ध के लिए	आप ﷺ का भोजन करने का ढंग
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	नहीं लौटाते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	तकल्लुफ नहीं करते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	कोई पवित्र चीज़ आपको पेश की जाती थी
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आपका जी नहीं मानता था तो

तीन उँगलियों से	पाँचों उँगलियों से खाता है एवं हथेली से धकेलता है	एक उँगली से	एक बार खाना	जब फ़ारिग हो जाते	आप ﷺ :
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अपनी ... उँगलियों से खाते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	चाटते थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	वह इससे अधिक प्रतिष्ठित है
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अहंकारी खाता है
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	लालची एवं लालसा रखने वाला





आप ﷺ की विशेषताएं

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताएं	आप सहज व सरल दीन -ए- हनीफ़ देकर भेजे गए थे	इब्नुल कैयिम रहिमहुल्लाह कहते हैं : (हनीफीया एवं समहा (सरल व सहज) दोनों को एक स्थान पर इकत्रित किया गया है क्योंकि तौहीद के मामले में हनीफीया (निश्छल) है तथा व्यवहार के मामले में सरल है, और इन दोनों का विपरीत: शिर्क तथा हलाल को हराम बनाना है)।
आप इंसानों तथा जिनानों के लिए भेजे गए थे	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “(पहले के) नबी केवल अपने समुदाय के लिए भेजे जाते थे, और मैं समस्त लोगों के लिए भेजा गया हूँ”।	
आपकी किताब और दावत	अल्लाह तआला का फ़रमान है: (अलिफ़ लाम रा, ऐ रसूल यह वह किताब है जिसको आपके ऊपर हमने इसलिए उतारा है कि आप लोगों को अंधेरे से उजाले की ओर लाएँ उनके रब के आदेश से सशक्त और प्रशंसनीय अल्लाह की ओर से)। इब्राहीम: १ ।	
आप की आयत (चमत्कार)	आपकी सबसे बड़ी आयत एवं चमत्कार कुरआन है, और आप के पूर्व जितने रसूलों और नबियों को जो भी चमत्कार दिए गए थे उसमें से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी हिस्सा मिला था।	
आप से प्रेम करना दीन व धर्म है	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “तुम में से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जबतक कि मैं उसके नज़दीक उसकी संतान उसके पिता तथा सभी लोगों से बढ़कर प्रिय व महबूब न हो जाऊँ”।	
आप से घृणा करने का हुक्म	ऐसा व्यक्ति कुफ़र -ए- अकबर का अपराधी है, अल्लाह तआला का फ़रमान है: (निःसंदेह आप का शत्रु ही लावारिस तथा बे नामो निशान रहेगा)। अल-कौसर: ३ ।	
आप ख़लील ﷺ	नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने मुझे वैसे ही से अपना ख़लील बना लिया है जैसे उसने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़लील बनाया था”।	
उलूल अज़्म (साहसियों) में से एक हैं	अल्लाह तआला का फ़रमान है: (जबकि हमने तमाम नबियों से वचन लिया औ -विशेष रूप से- आपसे और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरियम के पुत्र ईसा -अलैहिमुस्सलाम- से)। अल-अहज़ाब: ७।	
आपका इल्म	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “मैं तुम सबसे अधिक अल्लाह को जानने वाला हूँ”। और अल्लाह तआला का फ़रमान है: (आप कह दीजिए कि मैं न तो तुमसे यह कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब जानता हूँ, और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ)। अल-अनआम: ५०।	





<p>आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताएं</p>	<p>आप का आज्ञापालन तथा अवज्ञा करने वाले दोनों का हुक्म</p>	<p>अल्लाह तआला का फरमान है: (आप कह दीजिए कि यदि तुम अल्लाह से मोहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तआला तुमसे मोहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा)। आल -ए- इमरान: ३१ । और एक स्थान पर फरमाया: (तुम आलस्य न दिखाओ और न शोक मनाओ तुम ही गालिब (विजेता) रहोगे यदि तुम मोमिन हो)। आल -ए- इमरान: १३९ । और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “तुम में से प्रत्येक व्यक्ति जन्नत में प्रवेश करेगा सिवाय उसके जो इंकार करे” सहाबा ने पूछा: अल्लाह के रसूल, कौन इससे इंकार करेगा ? “आपने फरमाया: जिसने मेरे आदेशों का पालन किया वो जन्नत में प्रवेश पाएगा तथा जिसने मेरे आदेशों की अवहेलना की उसने इंकार किया”, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फरमाया है: “अपमान तथा अनादर उन लोगों के लिए है जो मेरे आदेशों का विरोध</p>
	<p>आपकी उम्मत</p>	<p>अल्लाह तआला का फरमान है: “तुम सर्वोत्तम उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा किए गए हो कि तुम नेक बातों का हुक्म देते हो और बुरी बातों से रोकते हो एवं अल्लाह तआला पर ईमान रखते हो”। आले इमरान: ३१ । और आपने फरमाया: “जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं उसकी क्रसम मेरा अनुमान है कि तुम जन्नत वासियों की आधी आबादी होगे”।</p>
	<p>आपका देश</p>	<p>आपका देश मक्का है, अल्लाह तआला का फरमान है: (अल्लाह तआला का पहला घर जो लोगों के लिए निश्चित किया गया वही है जो मक्का (शरीफ़) में है और जो समस्त संसार के लिए बरकत और हिदायत वाला है, जिसमें खुली-खुली निशानियाँ हैं, मक़ाम -ए- इब्राहीम है, इसमें जो आ जाए अमन वाला हो जाता है, अल्लाह तआला ने उन लोगों पर जो वहाँ तक आने में सक्षम हैं उस घर का हज़ फ़र्ज़ करार दिया है, और जो कोई कुफ़्र करे तो अल्लाह तआला (उससे बल्कि) तमाम दुनियाँ से बेपरवाह है)। आले इमरान: ९६ – ९७ । और मक्का हुरमत वाला नगर है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “अल्लाह ने जिस दिन आकाश व धरती को पैदा किया उसी दिन इस नगर को हराम करार दे दिया, अतः वह अल्लाह के हराम करार दिए जाने के कारण अब हुरमत वाला है”, और यह महाप्रलय तक मुसलमानों का देश है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “मक्का विजय के पश्चात अब कोई हिजरत (पलायन) नहीं”।</p>
	<p>आप का क़िबला</p>	<p>आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़िबला, काबा है, और इससे पहले बैतुल मक़दिस था, अल्लाह तआला का फरमान है: (हम आपके चेहरे को बार-बार आसमान की तरफ उठते हुए देख रहे हैं, अब हम आपको उस क़िबला की ओर फेर देंगे जिससे आप प्रसन्न हो जाएं, आप अपना मुख मस्जिद -ए- हराम की ओर फेर लें और आप जहाँ कहीं हों अपना मुँह उसी तरफ फेरा करें)। अल-बक्रा: १४४ । मस्जिद -ए- हराम प्रथम मस्जिद है जो इस धरती पर बनाई गई, अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: “मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से धरती पर बनाई गई सर्वप्रथम मस्जिद के विषय में पूछा तो आपने फरमाया: वह मस्जिद -ए- हराम है”। तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “जो इस घर को आया तथा न तो संभोग के क़रीब गया और न ही कोई बेहूदा हरकत की तो वह ऐसा पाक व पवित्र हो कर लौटता है जैसा माँ के पेट से पैदा होने के दिन पाक था”।</p>





आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताएं

आपका क़िबला

और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “मस्जिद -ए- हराम में एक नमाज़ का सवाब अन्य मस्जिदों में एक लाख नमाज़ पढ़ने के समान, और मेरी इस मस्जिद (-ए- नबवी) में एक नमाज़ का सवाब एक हजार नमाज़ के सवाब के समान है, तथा बैतुल मक़दिस में पाँच सौ नमाज़ के समान”।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “केवल तीन मस्जिदों के लिए यात्रा की जाएगी: मस्जिद -ए- हराम, मेरी मस्जिद (-ए- नबवी) और मस्जिद -ए- अक़सा”।

एवं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है: “जब तुम मल-मूत्र त्याग के लिए आओ तो क़िबला का सामना न करो और न ही उसे अपनी पीठ के पीछे रखो, बल्कि पूरब अथवा पश्चिम की ओर हो जाएओ”।

(नोट: यह आदेश मदीना वासियों एवं उन लोगों के लिए है जिनका क़िबला दक्षिण अथवा उत्तर की ओर है, किंतु जिनका क़िबला पश्चिम अथवा पूरब की ओर पड़ता है उनके लिए यह आदेश है कि वह दक्षिण अथवा उत्तर की ओर मुख कर के बैठें)।





आपकी पत्नियाँ एवं सगे-संबंधी

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सात संतान थी: चार पुत्रियां तथा तीन पुत्र	[1] कासिम, और इन्हीं के नाम पर आपने अपनी उपाधि अबुल कासिम रखी थी।	[2] जैनब रजियल्लाहु अन्हा		
	[3] रुकैया रजियल्लाहु अन्हा	[4] उम्मे कुलसूम रजियल्लाहु अन्हा		
	[5] फ़ातिमा रजियल्लाहु अन्हा	[6] अब्दुल्लाह, और इनका लक़ब तैयब व ताहिर था।		
	[7] इब्राहीम, यह मारिया क़िबतीय्या जो आपकी लौंडी थी उनसे पैदा हुए थे, जबकि आपकी अन्य सभी संतानें ख़दीजा रजियल्लाहु अन्हा से पैदा हुई थीं, उनके अतिरिक्त किसी भी पत्नी से आपको कोई संतान नहीं थी।			
	आपकी सभी संतान आप के जीवन काल ही में मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे सिवाय फ़ातिमा रजियल्लाहु अन्हा के, उनकी मृत्यु आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के छः महीना के बाद हुई, अल्लाह तआला ने सज़्र, धैर्य तथा अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखने के कारण समस्त संसार की महिलाओं पर उनको प्रधानता दी, और निर्विवाद रूप से फ़ातिमा आपकी सबसे अफ़ज़ल (सर्वश्रेष्ठ) पुत्री थीं।			
	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभी पुत्रियों ने इस्लाम का युग पाया तथा इस्लाम स्वीकार किया एवं आपके संग हिजरत (पलायन) किया।			
आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग्यारह चाचा थे	[1] शहीदों के सरदार हमज़ा रजियल्लाहु अन्हु	[2] अब्बास रजियल्लाहु अन्हु		
	[3] अबू तालिब तथा उनका नाम अब्दे मुनाफ़ था	[4] अबू लहब, तथा उसका नाम अब्दुल उज़्ज़ा था		
	[5] ज़ुबैर	[6] अब्दुल काबा	[7] अल-मुक़ब्बिम	[8] ज़िरार
	[9] कुसम	[10] मुगीरा एवं उसकी उपाधि हज़ल थी	[11] अल-ग़ैदाक़, एवं उसका नाम मुसअब था	
	आपके चाचाओं में से हमज़ा और अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा के सिवाय किसी और ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया।			





आपकी छः फूफियां थीं	[1] सफीय्या, यह जुबैर बिन अब्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु की माता थीं	[2] उम्मे हकीम अल-बैज़ा		
	[3] आतिका	[4] बर्रा	[5] अरवा	[6] उमैमा
	حَبْرَ صَخْرَ سَمْعَةَ (लघु रूप) उनके नाम का परिवर्ण (हज्र)	(حَبْرَ) = हफ़सा पुत्री उमर पुत्र अल-खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हुमा । (الجيم) = जुवैरिया पुत्री हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा । (الزاي) = ज़ैनब पुत्री जहश रज़ियल्लाहु अन्हा + ज़ैनब पुत्री खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा		
		(صخر) = सफीय्या पुत्री हुय्यि पुत्र अखतब रज़ियल्लाहु अन्हा । (الخاء) = खदीजा पुत्री खुवैलिद रज़ियल्लाहु अन्हा । (الراء) = उम्मे हबीबा रमला पुत्री सुफियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा ।		
		(سمعة) = सौदा पुत्री ज़मआ रज़ियल्लाहु अन्हा । (الميم) = मैमूना पुत्री हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा । (العين) = आइशा पुत्री अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु अन्हुमा । (هاء) = उम्मे सलमा हिन्द पुत्री अबू उमैया रज़ियल्लाहु अन्हा ।		
खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सर्वप्रथम धर्म पत्नी खदीजा बिन्त खुवैलिद कुरशीय्या असदीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा थीं, आपने उनसे नबूवत मिलने के पूर्व ही विवाह किया था जब उनकी आयु चालीस वर्ष थी, और उनके जीवन काल में आपने किसी अन्य महिला से विवाह नहीं किया, एवं आपकी सभी संतान उन्हीं से उत्पन्न हुई सिवाय इब्राहीम के, यह वही हैं जिन्होंने नबूवत मिलने के पश्चात आपकी बड़ी सहायता की और आपके हर सुख-दुःख में आपके साथ रहीं एवं अपनी जान तथा माल आप पर न्योछावर कर के आप को तसल्ली व संतोष दिलाती रहीं, अल्लाह तआला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम के हाथों आपको अपना सलाम भेजा था, यह खदीजा की ऐसी विशेषता है जो आपकी अन्य किसी और पत्नी को प्राप्त नहीं हुई, और आपकी मृत्यु हिजरत (पलायन) के तीन वर्ष पूर्व हुई।			
सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा	खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की मृत्यु के कुछ दिन बीत जाने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सौदा बिन्त ज़मआ कुरशीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा से विवाह किया, यही वह महान महिला हैं जिन्होंने अपनी बारी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को दे दिया था।			





<p>आइशा रजियल्लाहु अन्हा</p>	<p>उनके पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मे अब्दुल्लाह आइशा सिदीका बिनत सिदीक रजियल्लाहु अन्हा से विवाह रचाया जिनके सतीत्व की गवाही सातों आसमान के ऊपर से उतरी, यह आपको अत्यंत प्रिय व चहेती थीं, आप से विवाह रचाने के पूर्व ही फरिश्तों ने इसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समक्ष रेशम के कपड़े में लपेट कर दिखाते हुए कहा था: “यह आप की पत्नी हैं”, आपने इन से शव्वाल मास में विवाह किया था जबकि उनकी उम्र मात्र छः साल थी, और उनका गौना हिजरत के प्रथम वर्ष शव्वाल में हुआ जब उनकी आयु नौ वर्ष हो चुकी थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनके अतिरिक्त किसी अन्य कुंवारी लड़की से विवाह नहीं किया, और इनके सिवा किसी और पत्नी की रज़ाई में होते हुए आप पर वह्य (आकाशवाणी, प्रकाशना) नहीं उतरती थी, आइशा रजियल्लाहु अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकट सभी प्राणियों से अधिक प्रिय थीं, आपकी पाकदामनी (सतीत्व) आकाश से अवतरित हुई, एवं उम्मत इस बात पर निर्विवाद रूप से एक मत है कि अब जो आप पर व्यभिचार का लांछन लगाए वह काफिर है, यह आपकी पत्नियों में सर्वाधिक समझदार तथा ज्ञानी महिला थीं, बल्कि निर्विवाद रूप से यह इस उम्मत की समस्त महिलाओं में सबसे अधिक समझदार तथा ज्ञानी महिला हैं, बड़े-बड़े व आदरणीय सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम उनसे फतवा पूछा करते थे तथा उनकी राय स्वीकार करते थे।</p>
<p>हफ़सा रजियल्लाहु अन्हा</p>	<p>इनके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हफ़सा बिनत उमर बिन खत्ताब रजियल्लाहु अन्हा से विवाह रचाया, उन्होंने अपने पहले पति खुनैस बिन हुआफ़ा अल-सहमी के संग ही इस्लाम स्वीकार कर लिया था एवं उनके संग ही हिजरत कर के मदीना आ गई थीं, किंतु ग़ज़वा -ए- उहुद के पश्चात जब उनके पति का स्वर्गवास हो गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे विवाह किया।</p>
<p>ज़ैनब बिनत खुज़ैमा रजियल्लाहु अन्हा</p>	<p>इनके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ैनब बिनत खुज़ैमा बिन हारिस क़ैसिय्या रजियल्लाहु अन्हा जो बनू हिलाल बिन आमिर क़बीला से संबंध रखती थीं उनसे विवाह किया, इनसे विवाह के दो माह बाद ही इनका स्वर्गवास हो गया, यही वह महिला हैं जिनकी उपाधि उम्मुल मसाकीन (निर्धनों एवं फ़क़ीरों की माता) है।</p>
<p>उम्मे सलमा रजियल्लाहु अन्हा</p>	<p>इनके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिन्द बिनत अबू उमैया कुरशीय्या मख़ज़ूमिय्या रजियल्लाहु अन्हा से शादी की, तथा अबू उमैया का नाम: हुज़ैफ़ा बिन मुगीरा था, आपकी धर्म पत्नियों में सबसे अंत में स्वर्गवासी होने वाली यही हैं, आपकी मृत्यु हिजरत के बासठवें साल में हुई।</p>
<p>जुवैरीय्या रजियल्लाहु अन्हा</p>	<p>आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुवैरीय्या बिनत हारिस बिन अबू ज़िरार मुसतलिकीय्या रजियल्लाहु अन्हा से शादी की जोकि बनू मुसतलिक़ की बंदियों में से थीं, यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास अपनी आज्ञादी के लिए तय किए गए धन अदा करने में सहायता माँगने के लिए आई थीं तो आपने उनकी ओर से वह तय शुदा धन राशि अदा कर दी एवं उनसे विवाह कर लिया।</p>





ज़ैनब बिनत ज़हश रज़ियल्लाहु अन्हा

इनके पश्चात आपने ज़ैनब बिनत ज़हश रज़ियल्लाहु अन्हा से विवाह रचाया जो बनू असद बिन खुज़ैमा नामक कबीला से संबंध रखती थीं, यह आपकी फूफी उमैमा की पुत्री थीं, और इन्हीं के विषय में यह आयत उतरी थी: (जब ज़ैद -रज़ियल्लाहु अन्हु- ने उनसे अपनी आवश्यकता पूरी कर ली तो हमने उसे आपके निकाह में दे दिया)। अल-अहज़ाब: ३७।, और इसके कारण वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अन्य पत्नियों पर गर्व किया करती थीं और कहती थीं कि: “तुम्हारा विवाह तुम्हारे परिवार वालों ने कराया है जबकि मेरा विवाह अल्लाह तआला ने सातों आसमान के ऊपर से कराया है”।

आपकी विशेषताओं में से यह है कि आपका वली (अभिभावक) स्वयं अल्लाह था जिसने सातों आसमान के ऊपर से आपका विवाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तय किया, आपकी मृत्यु उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफत व शासनकाल के आरंभिक दौर में हुई, पहले आप ज़ैद बिन हारि़सा रज़ियल्लाहु अन्हु के संग विवाही गई थीं जिनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना मुँहबोला बेटा (दत्तक पुत्र) बना लिया था. जब ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको तलाक़ दे दिया तो अल्लाह तआला ने आपका विवाह उनसे करा दिया ताकि यह उम्मत के लिए अपने दत्तक पुत्रों की पत्नियों से विवाह करने का एक उदाहरण बन जाए।

उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा

इनके पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की, उनका नाम रमला बिनत अबू सुफ़ियान स़र्र बिन हर्ब कुरशीय्या उमवीय्या था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे हब्शा (इथोपिया Ethopia) की धरती पर विवाह किया था जहाँ वह हिज़रत करके गई थीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से उनका मुह नज्जाशी ने चार सौ दीनार अदा किया था, तत्पश्चात वह वहाँ से आपके पास मदीना लाई गई; और अपने भाई मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के शासनकाल में मृत्यु को प्राप्त हुईं।

सफ़ीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफ़ीय्या बिनत हुथ़िय बिन अख़तब बनू नज़ीर कबीला के सरदार जो मूसा अलैहिस्सलाम के भाई हारून बिन इमरान की संतान में से थे, उनसे विवाह रचाया, इस प्रकार वह एक नबी की पुत्री तो दूसरे नबी की पत्नी हुईं, आप संसार की सर्वाधिक सुंदर महिलाओं में से एक थीं, यह क़ैद हो कर आपकी लौंडी बन गई थीं तो आपने उन्हें स्वतंत्र कर दिया और उनकी स्वतंत्रता ही उनकी मुह ठहरी, और अब इसके बाद आज़ादी को मुह करार देना सुन्नत बन गई।

मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा

उनके पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मैमूना बिनत हारि़स हिलालीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की, यह सबसे अंतिम महिला थीं जिनसे आपने विवाह रचाया, आपने उनसे उमरा -ए- क़ज़ा से हलाल होने के पश्चात मक्का में शादी की थी।

इसमें कोई दो राय नहीं कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु हुई तो आपकी नौ पत्नियां जीवित थीं, आपकी मृत्यु पश्चात सर्वप्रथम मृत्यु को प्राप्त होने वाली आपकी पत्नियों में से ज़ैनब बिनत ज़हश रज़ियल्लाहु अन्हा थीं जिनकी मृत्यु सन २० हिज़्री में हुई, तथा सबसे अंत में वफ़ात पाने वाली आपकी पत्नी उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं जिनकी मृत्यु सन ६२ हिज़्री में यज़ीद बिन मुआविया के शासन काल में हुई।





पाठ दो: नबी ﷺ

की सीरत





पहला अध्याय: नबूवत मिलने के पूर्व

आप का जन्म	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ील (हाथी वाली घटना) वाले साल हिज्रत से ५३ वर्ष पूर्व रबीउल अब्वल के महीना में सोमवार के दिन मक्का में पैदा हुए जोकि ईस्वी वर्ष के अनुसार ५७१ ईस्वी था। (हाथी वाली यह घटना तथा अल्लाह तआला का उसे रोक देना यह अल्लाह तआला की ओर से अपने घर (काबा) तथा अपने नबी के लिए एक भूमिका के रूप में थी।)		
पिता	अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अभी अपनी माता के गर्भ ही में थे कि आपके पिता का देहांत हो गया, परिणामस्वरूप आप यतीम (अनाथ) पैदा हुए।		
माता	आमिना बिन्त वहब जो बनू जुहरा क़बीला से थीं, अभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आयु सात वर्ष की भी नहीं हुई थी कि आपकी माता जी भी चल बसी।		
लालन-पालन	आपकी माता के मृत्यु पश्चात आपका लालन-पालन आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने किया, और अभी आपकी आयु लगभग आठ वर्ष की हुई कि आपके दादा का भी देहांत हो गया, तत्पश्चात आपका पालन-पोषण आपके सगे चाचा अबू तालिब ने किया जिनका मूल नाम अब्द -ए- मुनाफ़ था।		
आपको दुग्धपान कराने वाली महिलाएं	सुबैबा	यह अबू लहब की लौंडी (दासी) थी, इसने आपके साथ अबू सलमा अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद मखज़ूमी को भी दूध पिलाया था और उनको यह दूध उनके बेटे मसरूह के पैदा होने के कारण उतरा था, औ इन दोनों के साथ-साथ उन्होंने आपके चाचा हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु को भी दुग्धपान कराया था।	
	हलीमा सादिया	इन्होंने अपने बेटे अब्दुल्लाह के जन्म के कारण उत्पन्न होने वाला दूध आपको पिलाया था, और अब्दुल्लाह, उनैसा और जुज़ामा -इन्हीं का नाम शैमा भी था- के भाई हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन रिफ़ाआ सादी की संतान में से थे, और आपके साथ-साथ उन्होंने आपके चचेरे भाई अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु को भी दूध पिलाया था।	
आपको अपने गोद में खेलाने वाली महिलाएं	आपकी माता आमिना	अबू लहब की लौंडी सुबैबा	हलीमा बिन्त अबू जुऐब सादिया
	शैमा	यह हलीमा सादिया की पुत्री तथा आपकी दूध शरीक बहन थीं, यह वही हैं जो हवाज़िन के प्रतिनिधि मंडल में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई थीं तो आपने इनका आदर करते हुए अपना चादर बिछाकर उस पर इन्हें बैठाया था।	





<p>आपको अपने गोद में खेलाने वाली महिलाएं</p>	<p>उम्मे ऐमन</p>	<p>इनका नाम बरका अल-हबशीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा है, यह आपकी दाईं थीं जिन्हें आप ने अपने पिता की ओर से उत्तराधिकार (विरासत) में पाया था।</p> <p>आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनका विवाह अपने प्रिय ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु से कराया था तो उनसे उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा पैदा हुए।</p> <p>यही वह महिला हैं जिनके पास नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु पश्चात अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा आए तो देखा कि वह रो रहीं हैं, तो उन दोनों ने पूछा: क्यों रो रही हो? क्या अल्लाह के पास जो है वह उसके रसूल के लिए यहाँ से बेहतर नहीं है? तो उन्होंने कहा: (मैं जानती हूँ कि अल्लाह के पास जो है वह उसके रसूल के लिए बेहतर है, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस स्थिति में थे उससे बेहतर स्थिति में पहुँच चुके हैं, किंतु मैं तो इस लिए रो रही हूँ कि आसमान से वह्य (प्रकाशना) का सिलसिला समाप्त हो गया!!) यह सुनना था कि वह दोनों भी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे।</p>
<p>आपके कार्य</p>		<p>आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बकरियां चराईं, जो सन्न (धैर्य), दुर्बलों के ऊपर दया भाव एवं उनकी देख-भाल करने जैसे गुण आपके अंदर पाए जाने का एक बड़ा कारण बना।</p> <p>आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने जितने भी नबी भेजे सभी ने बकरियां चराईं” सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा: क्या आपने भी? आपने फ़रमाया: “हाँ, मैं चंद क्ररारीत (पैसों) के बदले मक्का वासियों की बकरियां चराया करता था”।</p>
<p>व्यापार एवं विवाह</p>		<p>जब आपकी आयु २५ वर्ष हुई तो आप व्यापार के लिए शाम (सीरीया) गए, और बुसरा जाकर वापस लौटे, वहाँ से लौटने के पश्चात ही आप की पहली पत्नी खदीजा बिनत खुवैलिद रज़ियल्लाहु अन्हा से आपने विवाह किया।</p>
<p>काबा का पुनर्निर्माण</p>		<p>जब आपकी उम्र ३५ साल हुई तब तक काबा की दीवार जर्जर व क्षीण हो चुकी थी और किसी भी क्षण गिर सकती थी यह देख कर कुरैश ने इसके पुनर्निर्माण का इरादा बनाया, कुरैश के सभी क़बीला के लोगों ने निर्माण के लिए एक-एक किनारा बाँट लिया, निर्माण जब हज़र -ए- असवद तक पहुँचा तो इस बात को लेकर झगड़ा होने लगा कि इसको उठा कर इसके अपने निश्चित स्थान पर कौन रखेगा? ऐसा करते हुए चार या पाँच दिन बीत गए, फिर वो इस बात पर सहमत हो गए कि सर्वप्रथम काबा में जो प्रवेश करेगा वह इस झगड़ा का समाधान निकालेगा, सौभाग्यवश काबा में सर्वप्रथम दाखिल होने वाले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे अतः उन्होंने आपको अपना फैसला करने का अधिकार दिया, आपने एक चादर मंगाया तथा उसमें हज़र -ए- असवद रखा और हरेक क़बीला को एक किनारा पकड़ कर उठाने के लिए कहा यहाँ तक कि जब वह अपने उचित स्थान तक उठा लिया गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने हाथों से उसे उसकी जगह स्थापित कर दिया।</p>
<p>आपका एकांतप्रिय होना</p>		<p>आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि: “आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एकांत प्रिय थे, अर्थात् आप शार -ए- हिरा में एकांत में चले जाते और कई-कई रातों तक इबादत करते रहते” और नैसर्गिक रूप से आपके दिल में मूर्तियों तथा अपने समुदाय द्वारा अपनाए हुए धर्म से घृणा हो गई थी, आपके निकट इससे घृणित चीज़ कोई और नहीं थी।</p>



दूसरा अध्याय: वृह्य का आरंभ

जब आपकी आयु ४० वर्ष हुई तो आपके ऊपर नबूवत का सूर्य उदय हुआ और अल्लाह तआला ने सोमवार के दिन रसूल बना कर आपको सम्मानित किया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि: “वृह्य का प्रारंभ आपके नींद में सच्चे सपनों से हुआ, आप जब भी कोई सपना देखते थे तो वह भोर के उजियारे के समान सही व सच्चा साबित होता, फिर आप एकांत प्रिय हो गये, कई-कई रातों आप ग़ार -ए- हिरा में एकांतवास में इबादत करते हुए बिता देते, जब तक घर आने का दिल नहीं करता अपना तोशा (पाथेय) लिए हुए वहीं रहते, तोशा समाप्त होने पर अपनी पत्नी ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आते तथा फिर तोशा ले कर वहीं चले जाते, यहाँ तक कि ग़ार -ए- हिरा में ही आपको सत्य का ज्ञान हुआ और आप पर प्रकाशना हुई, आपके पास फरिश्ता आया और कहा: पढ़िए, आपने कहा: मैं पढ़ना नहीं जानता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते हैं कि: फिर फरिश्ते ने मुझे पकड़ कर ख़ूब ज़ोर से भींचा यहाँ तक कि मुझे तक्लीफ़ होने लगी फिर मुझे छोड़ दिया और कहा: पढ़िए, आपने कहा: मैं पढ़ना नहीं जानता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते हैं कि: फिर फरिश्ते ने मुझे पुनः दोबारा पकड़ कर ख़ूब ज़ोर से भींचा यहाँ तक कि मुझे तक्लीफ़ होने लगी फिर मुझे छोड़ दिया और कहा: पढ़िए, आपने कहा: मैं पढ़ना नहीं जानता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते हैं कि: फिर फरिश्ते ने मुझे पकड़ कर तीसरी बार ख़ूब ज़ोर से भींचा यहाँ तक कि मुझे तक्लीफ़ होने लगी फिर मुझे छोड़ दिया और कहा: ﴿أَقْرَأْ بِأَسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ﴿١﴾ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ﴿٢﴾﴾

[العلق] ﴿٢﴾ ﴿١﴾ (अपने रब के नाम से पढ़िए जिसने पैदा किया, जिसने इंसान को रक्त के लोथड़े से पैदा किया, आप पढ़ते रहिए आपका रब बड़ा करम वाला है), आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह आयतें सुन कर घर लौटे और इस अनोखी घटना से आप काँप रहे थे, आप खदीजा बिनत ख़ुवैलिद रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आए तथा कहा: मुझे कम्बल ओढ़ा दो, मुझे कम्बल ओढ़ा दो, लोगों ने आप को कम्बल ओढ़ा दिया यहाँ तक कि जब आपका भय समाप्त हो गया तो आपने खदीजा से बात की और उन्हें इस घटना से अवगत कराया और कहा: मुझे अपनी जान का ख़तरा लग रहा है, तो खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ढाढस बंधाते हुए कहा: अल्लाह की क़सम कदापि ऐसा नहीं होगा कि अल्लाह आपको अपमानित करेगा, आप सगे-संबंधियों से मेल-मिलाप रखते हैं, दुर्बलों का बोझ उठाते हैं, निर्धनों को कमा कर खिलाने हैं, आप अतिथि का सत्कार करते हैं, विपत्ति में फंसे हुए लोगों की सहायता करते हैं।

खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा आपको लेकर वरक़ा बिन नौफल बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा जो खदीजा के चचेरे भाई थे के पास आईं, और वरक़ा ऐसे आदमी थे जिन्होंने जाहिलीयत (अंधकार) वाले युग में ईसाई धर्म अपना लिया था, और किताब को इबरानी भाषा में लिखा करते थे इस प्रकार से इज़ील को इबरानी भाषा में जितना अल्लाह तौफ़ीक़ देता उतना नक़ल करने का काम किया करते थे, अत्याधिक बूढ़ा हो जाने के कारण वह अंधे हो गए थे, खदीजा ने उनसे कहा: हे मेरे चचेरे भाई, थोड़ा अपने भतीजे की बात सुन लीजिए, तो वरक़ा ने आपसे कहा: हे मेरे भतीजे तुम क्या देखते हो? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ देखा था समस्त वृत्तांत सुना दिया, तो वरक़ा ने आपसे कहा: यह वही नामूस (आदरणीय भेदी फरिश्ता) है जिसको अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारा था, हाय मैं उस समय जवान होता, काश मैं उस समय जीवित होता जब आपकी क़ौम आपको यहाँ से निकालेगी, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आश्चर्य से पूछा: क्या वो मुझे सच में निकालेंगे? उसने कहा: हाँ, जिस चीज़ को ले कर आप आए हैं उसको लेकर जो भी नबी आए उनकी



<p>आपकी नबूवत</p>	<p>क्रौम ने उनसे दुश्मनी की, यदि मुझे आपका ज़माना मिल जाए तो मैं आपकी भरपूर सहायता करूँगा, फिर कुछ दिन के बाद वरका की मृत्यु हो गई तथा व्ह्य का सिलसिला बंद हो गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं: मैं रास्ते में जा रहा था कि अचानक आकाश से एक आवाज़ सुनी जब मैंने ऊपर की ओर देखा तो वही फरिश्ता आकाश एवं धरती के बीच कुर्सी पर बैठा हुआ दृष्टिगोचर हुआ जो हिरा में आया था, मैं उससे डर गया, और लौट कर आया तथा कहा: मुझे कम्बल ओढ़ाओ, मुझे कम्बल ओढ़ाओ, तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी: (हे कपड़ा ओढ़ने वाले, खड़ा हो जा और डरा) से लेकर (तथा मलीनता को त्याग दे) तक (अल-मुद्सिर: १-५) इसके बाद व्ह्य का मामला आगे बढ़ा और निर्बाध व्ह्य उतरने लगा।</p>	
<p>व्ह्य (आकाशवाणी, प्रकाशना) की श्रेणी</p>	<p>[1] सपना</p>	<p>व्ह्य (प्रकाशना) का आरंभ इसी प्रकार हुआ, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: “आप जब भी कोई सपना देखते तो सुबह की रौशनी की तरह वह सच्चा हो कर सामने आ जाता”।</p>
<p>[2] मन में डालना</p>	<p>फरिश्ता आपके दिल एवं मस्तिष्क में बिना सामने आए डाल देता था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “रूहुल अमीन (जिब्रील) ने मेरे मन-मस्तिष्क में डाल दिया और मुझे सूचना दी कि ...”।</p>	
<p>[3] फरिश्ते का मानव रूप धारण करना</p>	<p>नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “फरिश्ता कभी-कभी मेरे पास मानव के रूप में आता है तथा मुझसे बात करता है, तो वह जो कहता है मैं उसको अंगीकार कर लेता हूँ”, इस रूप में फरिश्ता को कभी-कभी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम भी देख लिया करते थे।</p>	
<p>[4] इंकार, धरघराहट</p>	<p>आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “कभी-कभी मेरे पास व्ह्य घंटी (की इंकार) के समान अवतरित होती है, यह मेरे लिए सबसे कठिन होता है, जब तक वह समाप्त होता है तब तक उन्होंने जो कुछ मुझ से कहा होता है मैं याद कर चुका होता हूँ”, और आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि: “मैंने अत्यंत ठंड के दिनों में आप पर व्ह्य उतरते देखा है, जब वह समाप्त होता तो आपके ललाट पर पसीना बह रहा होता”, बल्कि यदि आप सवार होते तो आपकी सवारी उस बोझ के कारण बैठ जाती थी।</p>	
<p>[5] फरिश्ता अपने स्वाभाविक रूप में</p>	<p>आप फरिश्ता को उस रूप में भी देखते थे जिस रूप में उसे पैदा किया गया है, अल्लाह जो व्ह्य करना चाहता उसे वह आप तक पहुँचा देते, ऐसा आपके साथ दो बार हुआ जैसा कि सूरा नज्म में अल्लाह ने इसका उल्लेख किया है।</p>	
<p>[6] अल्लाह की ओर से प्रत्यक्ष व्ह्य</p>	<p>इसका उदाहरण वह है जो सातों आसमान के ऊपर प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह तआला ने मेराज की रात में आप पर नमाज़ फ़र्ज़ करने इत्यादि से संबंधित व्ह्य की थी।</p>	
<p>[7] अल्लाह का आप से बात करना</p>	<p>नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अल्लाह तआला ने वैसे ही बिना किसी वास्ता व माध्यम के (मेराज वाली रात में) वार्तालाप किया जैसा मूसा अलैहिस्सलाम से किया करता था।</p>	





<p>सर्वप्रथम आप पर अवतरित होने वाली वृष्टि</p>	<p>सर्वप्रथम आप पर सूरह अलक़ की प्रारंभिक पाँच आयतें (श्लोक) उतरीं: ﴿أَقْرَأْ بِأَسْمِ رَبِّكَ الَّذِي﴾ ﴿حَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ﴾ (१) ﴿أَقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ﴾ (२) ﴿الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ﴾ (३) ﴿عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَم﴾ (४) ﴿﴾ (५) (पढ़ अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, जिसने इंसान को खून के लोथड़े से पैदा किया, तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करीम है, जिसने क़लम के द्वारा (इल्म) सिखाया, जिसने इंसान को वह सिखाया जिसको वह नहीं जानता था)। अल-अलक़: १-५।</p>
<p>आपके दावत की श्रेणी</p>	<p>[1] नबूवत [2] सगे संबंधियों को डराना [3] अपने समुदाय को डराना</p> <p>[4] उस क़ौम को डराना जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया था, और इससे अभिप्राय समस्त अरब हैं।</p> <p>[5] हरेक उस इंसान व जिनों को डराना जिनको क़यामत तक आपकी दावत पहुँचेगी।</p>
<p>दावत का चरण</p>	<p>[1] गुप्त एवं छिप्त दावत: यह नबूवत के प्रारंभिक तीन वर्षों तक चली।</p> <p>[2] खुली दावत: जब आपको इसका आदेश दिया गया: (आप उस आदेश को जो आपको दिया जा रहा है खोल कर स्पष्ट रूप से सुना दीजिए)। अल-हिज़्र: ९४।</p>
<p>सर्वप्रथम ईमान लाने वाले</p>	<p>पुरुषों में: अबू बकर सिदीक़। महिलाओं में: खदीजा बिनत ख़ुवैलिद।</p> <p>बच्चों में: अली बिन अबू तालिब। आज़ाद किए जा चुके सेवकों में: ज़ैद बिन हारिसा।</p> <p>सेवकों में: बिलाल बिन रबाह अल-हबशी।</p>
<p>जिन लोगों ने प्रारंभिक दौर में इस्लाम स्वीकार किया</p>	<p>आप पर प्रारंभिक दौर में ईमान लाने वाले जिन लोगों का हम उल्लेख कर चुके हैं उनके अतिरिक्त आपके घर वालों ने इस्लाम स्वीकार किया फिर उसमान बिन अफ़फ़ान, त़लहा बिन उबैदुल्लाह, ज़ुबैर बिन अव्वाम, साद बिन अबी वक्रकास, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, ख़ब्बाब बिन अरत्त, सुहैब रूमी, अम्मार बिन यासिर उनकी माता सुमैया, अबू उबैदा आमिर बिन ज़र्राह, उसमान बिन मज़ऊन, अबू सलमा बिन अब्दुल असद एवं उतबा बिन ग़ज़वान रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इस्लाम स्वीकार किया।</p>



तीसरा अध्याय: मक्की काल

मुश्रिकीन का नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं आपके सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम को कष्ट पहुँचाना

मुश्रिकीन ने जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत की सच्चाई तथा लोगों को उसे स्वीकार करते हुए देखा तो आपको कठोर से कठोरतम पीड़ा देना आरंभ किया, मुश्रिकीन द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिए जा रहे पीड़ा के कुछ रूप निम्नांकित हैं:

- आपकी ओर से यह झूठ फैलाना कि आप जादूगर हैं ताकि लोगों के मन में आपके प्रति घृणा एवं डर उत्पन्न किया जा सके।
- आपकी ओर से यह झूठ फैलाना कि आप पागल हैं ताकि लोग आपको मूर्ख समझें।
- आपकी ओर से यह झूठ फैलाना कि आप झूठे हैं, और इसका खंडन इस बात से हो जाता है कि आप उनके बीच अपनी सच्चाई एवं अमानतदारी के कारण अमीन (अमानतदार) के नाम से प्रसिद्ध थे।
- आपका तथा जो शरीअत लेकर आप आए थे उसका उपहास बनाना।
- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब लोगों को दावत देने के लिए जाते तो वो लोग शोर और हल्ला मचाते ताकि लोगों को वह्य और जो हक (सत्य) लेकर आप आए हैं उसे सुनने से रोक दें।
- मक्का से बाहर के लोग जो उमरा या हज के उद्देश्य से आते उनका स्वागत करना तथा उनको नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातों को सुनने से रोकने का प्रयास करना।
- आपको शारीरिक पीड़ा देना जैसे उक्रबा बिन अबू मुऐत ने किया था कि एक बार आपके गले में कपड़े का फंदा डाल कर इतने ज़ोर से खींचा कि ऐसा लगा मानो आपके प्राण पखेरू उड़ने वाले हैं यहाँ तक कि अबू बकर रजियल्लाहु अन्हु ने उसको आप से दूर किया, इसी प्रकार से आपके ऊपर ऊँट की ओझड़ी डाल दी गई थी जिसे आपकी पुत्री फ़ातिमा रजियल्लाहु अन्हा ने साफ किया।
- आपको क्रल्ल करने का प्रयास करना, चुनाँचे इसी उद्देश्य से उन्होंने आप के चाचा अबू तालिब के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बदले में वो लोग अबू तालिब को उमारा बिन वलीद दे दें और वो लोग आपको क्रल्ल कर दें, इसी प्रकार हिजरत के समय भी उन लोगों ने आपको जान से मारने का प्रयास किया था।
- दुर्बल व कमज़ोर मोमिनों को कठोर से कठोरतम पीड़ा देना जैसे वो लोग बिलाल के पेट पर पत्थर रख देते थे, और जिस प्रकार का अमानवीय व्यवहार वो अम्मार बिन यासिर एवं उनके परिवार वालों के संग किया करते थे वह जग जाहिर है, रजियल्लाहु अन्हुम।

हबशा (इथोपिया) की
और हिजरत (पलायन)

जब मुस्लिमों की संख्या बढ़ने लगी तथा कुफ़ार उनसे डरने लगे तो उनका अत्याचार और उपद्रव और बढ़ गया, यह सब देख कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें हबशा की ओर हिजरत (पलायन) करने की अनुमती दे दी, और फ़रमाया: “उस देश का राजा एक ऐसा व्यक्ति है जिनके समक्ष लोगों पर अत्याचार नहीं हो सकता”।



पहली हिजरत हबशा की ओर	पहली हिजरत	इस हिजरत में बारह (१२) पुरुष तथा चार (४) महिलाएं थीं, जिनमें उसमान बिन अफ़फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे, सर्वप्रथम वह तथा उनकी धर्म पत्नी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी रुक़ैया निकले, हबशा में वो लोग बड़े ही अच्छे ढंग से जीवन-यापन करने लगे, फिर उनको यह सूचना मिली कि कुरैश ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है जबकि यह सूचना झूठी थी, यह सुन कर वो लोग मक्का लौट आए, और यहाँ आकर पता चला कि स्थिति पहले की तुलना में अधिक पीड़ादयक है तो कुछ लोग वहीं से लौट गए और कुछ लोग नगर में प्रवेश कर गए तो उन्हें कुरैश की ओर से अत्यंत कष्टों का सामना करना पड़ा, नगर में प्रवेश करने वाले लोगों में से अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे।
	दूसरी हिजरत	दूसरी हिजरत में तिरासी (८३) पुरुष तथा अट्ठारह (१८) महिलाओं ने हबशा की ओर प्रस्थान किया, वे लोग नज्जाशी के पास बड़ी अच्छी स्थिति में ठहरे रहे, जब यह बात कुरैश को पता चली तो उन्होंने अम्र बिन आस एवं अब्दुल्लाह बिन अबू रबीआ को एक गिरोह के संग भेजा ताकि नज्जाशी के हृदय में साम दाम दंड भेद किसी भी प्रकार से मुसलमानों के प्रति घृणा उत्पन्न कर दें, किंतु अल्लाह तआला ने उनकी चाल को उन्हीं पर पलट दिया।
हमजा व उमर का इस्लाम स्वीकार करना	नबूवत के छठे वर्ष हमजा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया, जो कुरैश के सबसे शक्तिशाली व्यक्तियों में गिने जाते थे, इस प्रकार अल्लाह तआला ने उनके द्वारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमलुल्लाह को ताकत दी, फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं की बरकत से उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया और तब जाकर कुरैश के अत्याचार का सिलसिला थमा।	
अबू तालिब की घाटी में	रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रति कुरैश का अत्याचार बढ़ता ही गया यहाँ तक कि उन्होंने आपको अपने परिवार वालों समेत अबू तालिब की घाटी में तीन वर्ष तक कैद कर दिया, इसी घाटी में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का जन्म हुआ, काफ़िरों को आपसे बड़ा दुःख पहुँचा और अंततः आप उस धिराव से बाहर निकले, और उस समय आपकी आयु ४९ वर्ष हो चुकी थी।	
अबू तालिब एवं खदीजा की मृत्यु	इसके कुछ महीना बीत जाने के बाद आपके चाचा अबू तालिब का ८७ वर्ष की आयु में देहांत हो गया, उसके कुछ ही दिनों के पश्चात खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का भी स्वर्गवास हो गया, अब काफ़िरों का अत्याचार और बढ़ गया।	
आपका ताइफ़ जाना	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ैद बिन हारिसा के संग अल्लाह की ओर दावत देने के लिए ताइफ़ गए, वहाँ आप कुछ दिन ठहरे रहे किंतु उन लोगों ने आपकी दावत को स्वीकार नहीं किया, बल्कि आपको कष्ट देकर वहाँ से निकाल दिया, आपको पत्थरों से मारा यहाँ तक कि आपके दोनों टखने लहूलहान (रक्त रंजित) हो गए, वहाँ से लौट कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का आए, तथा मुतइम बिन अदी की ज़मानत पर मक्का में प्रवेश किया।	





<p>अदास का इस्लाम</p>	<p>वहाँ से लौटते हुए रास्ते में अदास जोकि ईसाई थे उनसे भेंट हुई तो वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान ले आए तथा आपकी पुष्टि की।</p>	
<p>जिन्नों का इस्लाम</p>	<p>उसी मार्ग में नखला नामक स्थान पर नसीबैन समुदाय से संबंध रखने वाले सात जिन्नों के एक समूह का आपके पास से गुजर हुआ, उन्होंने कुरआन को सुना तो इस्लाम स्वीकार कर लिया।</p>	
<p>इसा व मेराज (आसमान की सैर)</p>	<p>फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सशरीर व मय रूह रात्रि में मस्जिद -ए- अक्रसा ले जाया गया, तत्पश्चात वहाँ से सशरीर एवं मय प्राण आपको मेराज कराई गई अर्थात आसमानों के ऊपर अल्लाह के पास ले जाया गया, अल्लाह तआला ने आपसे वार्तालाप किया तथा आपके ऊपर नमाज़ फ़र्ज़ किया।</p>	
<p>आपका क़बीलों के समक्ष इस्लाम पेश करना</p>	<p>आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में रह कर क़बीलों को अल्लाह तआला की ओर बुलाते रहे, और प्रत्येक वर्ष हज के मौसम में आप उनके समक्ष अपने आपको पेश करते कि वो आपको शरण दें ताकि आप अपने रब की रिसालत को लोगों तक पहुँचा सकें और इसके बदले उन्हें स्वर्ग मिलेगा, किसी भी क़बीला ने आप के निमंत्रण को स्वीकार नहीं किया, वास्तव में यह सम्मान तो अल्लाह तआला ने अंसार के भाग्य में लिख दिया था, अतः वहाँ के छः लोग आए और अल्लाह व उसके रसूल की दावत को स्वीकार किया, तत्पश्चात वो लोग मदीना लौटे और अपने समुदाय को इस्लाम की दावत दी यहाँ तक कि इस्लाम फैल गया और अंसार के घरों में से कोई घर ऐसा नहीं बचा जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चर्चा न होती हो।</p>	
<p>अंसार तथा अक्रबा की बैअत (वचन)</p>	<p>पहिल बैअत</p>	<p>अगले वर्ष अंसार के १२ व्यक्ति मक्का आए, जिनमें से पाँच तो वही पहली बार वाले छः लोगों में से थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे सूरा मुमतहिना में वर्णित महिलाओं वाली बैअत (वचन) अक्रबा (कठिन घाटी) में लिया, तत्पश्चात वो लोग मदीना लौट गए।</p>
	<p>दूसरी बैअत</p>	<p>उससे अगले वर्ष ७३ पुरुष तथा दो महिलाएं आईं, यह अंतिम अक्रबा वाले थे, उन्होंने यह बैअत किया (वचन दिया) कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वैसा ही बचाव करेंगे जैसे वो अपनी महिलाओं, संतानों का करते हैं तथा जैसी वो अपनी जानों की रक्षा करते हैं, जिसके बाद आप तथा आपके सहाबा ने उनकी ओर प्रस्थान किया था, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनमें से बारह लोगों को नक़ीब (सरदार) नियुक्त किया।</p>





चौथा अध्याय: मदनी काल

<p>हिजरत की अनुमति</p>	<p>रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों को मदीना की ओर हिजरत (पलायन) करने की अनुमति दी, तो वो लोग जत्था बना कर तलवार लटकाए हुए निकले, उनमें सबसे पहला जैसाकि प्रचलित है: अबू सलमा बिन अब्दुल असद मखजूमि थे, और एक राय के अनुसार वह: मुसअब बिन उमैर थे, वो लोग अंसार के पास उनके घरों में उतरे, और अंसार ने उन्हें शरण दिया, उनकी सहायता की और इस तरह मदीना में इस्लाम फैल गया।</p> <p>फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी हिजरत की अनुमति मिल गई, तो आप रबीउल अब्वल के महीना में सोमवार के दिन मक्का से निकले, उस समय आपकी आयु ५३ वर्ष थी, और आपके संग अबू बकर सिद्दीक तथा अबू बकर के स्वतंत्र किए हुए दास आमिर बिन फुहैरा थे, और आप लोगों का मार्गदर्शक अब्दुल्लाह बिन उरैकित लैसी था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के संग शार -ए- सौर (सौर नामक गुफा) में दाखिल हुए तथा उसमें तीन दिन तक रहे, फिर साहिल के रास्ते वहाँ से कूच किया।</p>
<p>आपका मदीना में प्रवेश</p>	<p>जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं आपके साथी मदीना पहुँचे -जोकि १२ रबीउल अब्वल सोमवार का दिन था- तो मदीना के ऊपरी भाग कुबा में बनू अम्र बिन औफ़ के पास विश्राम के लिए उतरे और उनके पास चौदह दिनों तक ठहरे रहे।</p>
<p>इस्लाम की सर्वप्रथम मस्जिद</p>	<p>और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुबा में मस्जिद की नींव रखी, अब्दुलल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि: “नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम प्रत्येक शनिवार को पैदल अथवा सवार हो कर कुबा जाया करते थे”, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “कुबा में नमाज़ अदा करना उमरा करने के समान है”।</p>
<p>मस्जिद -ए- नबवी का निर्माण</p>	<p>फिर वहाँ से अपनी ऊँटनी पर सवार हो कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चले, लोग आप की ऊँटनी की लगाम पकड़-पकड़ कर आप से विनती कर रहे थे कि आप उनके यहाँ ठहरें, आप उनसे बस इतना कहते: “इसका मार्ग छोड़ दो इसे आदेश मिला हुआ है”, अंततः ऊँटनी उस स्थान पर जाकर बैठ गई जहाँ आज मस्जिद -ए- नबवी है, जोकि उस समय बनू नज्जार के दो बालक: सह्व व सुहैल का खलिहान था, वहाँ आप अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के घर उतरे, फिर आपने उस खलिहान के स्थान पर अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ मिल कर कच्ची ईंट एवं खजूर की टहनी से मस्जिद का निर्माण किया, तत्पश्चात अपने तथा अपनी पत्नियों के लिए उसी के बगल में निवास स्थान का निर्माण किया, उसमें सबसे समीप आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का घर था, फिर सात महीना बीत जाने के बाद अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु के घर से यहाँ स्थानांतरण किया।</p>





<p>भाईचारा</p>	<p>मस्जिद निर्माण के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुहाजिरीन जिनकी संख्या नब्बे थी तथा अंसार के मध्य एक-दूजे की सहायता के आधार पर भाई चारा (बंधुत्व) कायम किया, तथा बद्र की घटना से पहले तक वो लोग एक दूसरे के मृत्यु पश्चात उत्तराधिकारी (वारिस) भी बनते थे।</p>
<p>यहूदी</p>	<p>जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आए और यहूदियों ने आपको देखा तो समझ गए कि आप सच्चे रसूल हैं और आप वही हैं जिनका वर्णन वो अपनी किताब तौरात में पाते थे, इसके बावजूद उनमें से बहुत कम लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया जिनमें से एक उनके ज्ञानी एवं प्रकांड विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे, तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों के कबीले बनू कैनुकाअ, बनू नज़ीर तथा बनू कुरैजा से संधि (मैत्री) की।</p>
<p>क्रिबला का परिवर्तन</p>	<p>मेराज में नमाज़ फ़र्ज़ होने के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैतुल मक़दिस की ओर घूम कर नमाज़ पढ़ा करते थे, और आपकी चाहत थी कि क्रिबला बदल कर मक्का कर दिया जाए और इसी आशा में आप अपने मुख को आकाश की ओर उठा कर देखा ताका करते थे, तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी: (हम आपके मुख को बार-बार आसमान की तरफ उठते हुए देख रहे हैं, हम आपका रुख उस क्रिबला की ओर फेर देंगे जिससे आप प्रसन्न हो जाएंगे)। अल-बक्रा: १४४, और ऐसा सन दो हिजरी में हुआ, अतः हिजरत के दूसरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्रिबला, काबा से बदल दिया गया।</p>
<p>जिहाद की अनुमति</p>	<p>नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मदीना में पूर्णरूपेण स्थापित हो गए तथा अंसार ने हर प्रकार से आपकी सुरक्षा की तो अल्लाह तआला का यह आदेश अवतरित हुआ: (जिन (मुसलमानों) से (काफिर) युद्ध कर रहे हैं उन्हें भी मुकाबला (प्रतिकार) करने की अनुमति दी जाती है क्योंकि वो मज़लूम -पीड़ित- हैं, निःसंदेह अल्लाह उनकी सहायता करने में समर्थ है, ये वो हैं जिन्हें नाहक अपने घरों से निकाला गया सिर्फ इतनी सी बात कहने पर कि हमारा रब (प्रभु) केवल अल्लाह है)। अल-हज्ज: ३९-४०, अतः अल्लाह तआला ने मोमिनों को मुश्रिकीन के विरुद्ध युद्ध की अनुमति दे दी। और आपके प्रारंभिक ग़ज़वों में से ग़ज़वा -ए- अबवा, बुवात, उशैरा तथा कुछेक और सरीय्या हैं।</p>
<p>ग़ज़वा -ए- बद्र (बद्र नामक युद्ध)</p>	<p>हिजरत के दूसरे वर्ष रमज़ान मास में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन सौ से कुछेक ऊपर (लगभग तीन सौ तेरह) मोमिनों के संग शाम से लौट रहे कुरैश के क़ाफिला की तलाश में निकले, तो अबू सुफियान उस क़ाफिला को दूसरे मार्ग से लेकर निकल गया, और शैतान ने कुरैश को मोमिनों से युद्ध करने के लिए उभारा अतः वो निकले और बद्र नामक स्थान पर दोनों समूह की भेंट हुई, और यही वह महा युद्ध ग़ज़वा -ए- बद्र अल-कुबरा है जिसे यौमुल फुरक़ान (सत्य एवं असत्य के बीच अंतर स्पष्ट कर देने वाला दिन) भी कहा जाता है। जब दोनों समूह आपस में टकराए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने रब से गिड़गिड़ा कर दुआ माँगी, तो अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के द्वारा मोमिनों की सहायता की जो उनके संग युद्ध लड़ रहे थे, और अल्लाह तआला ने काफिरों के ऊपर आपको विजयी किया तथा अपने कलमा को सर्वोच्चता प्रदान की, बद्र में मुश्रिकीन में से सत्तर आदमी मारे गए तथा मोमिनों में से चौदह आदमी शहीद हुए।</p>



<p>ग़ज़वा बन् कैनुकाअ</p>	<p>सन तीन हिजरी में बनू कैनुकाअ ने संधि तोड़ दिया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पंद्रह रातों तक उनका घेराव किया, फिर वो आपके हुकम पर उतरे तो आपने उन्हें छोड़ दिया, और उनकी संख्या उस समय सात सौ थी।</p>
<p>ग़ज़वा -ए- उहुद</p>	<p>ग़ज़वा -ए- उहुद शव्वाल में हुआ, जब कुरैश बद्र में मारे गए अपने लोगों का बदला लेने के लिए लगभग तीन हजार लोगों को लेकर आए और जब वो लोग मदीना पहुँच गए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लगभग सात सौ लोगों को लेकर उहुद की ओर निकले, बाद में मुनाफ़िक़ीन आपका साथ छोड़ कर निकल गए।</p> <p>दिन के आरंभिक भाग में मुसलमानों का पलड़ा भारी था, फिर अल्लाह तआला ने मुसलमानों की परीक्षा ली और गेंद अब मुश्रीकीन के पाले में थी यहाँ तक कि वो लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुँच गए और आपको घायल व आहत कर दिया तथा आपके सामने के दो दांत तोड़ दिए, उस दिन आपके साथ फरिश्तों ने भी लड़ाई लड़ी, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में से सत्तर लोग शहीद हो गए जिनमें हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब, मुसअब बिन उमैर, अनस बिन नज़्र तथा फरिश्तों द्वारा स्नान दिए गए हनज़ला रज़ियल्लाहु अन्हुम आदि थे।</p> <p>उस दिन तल्हा बिन अब्दुल्लाह की बड़ी अच्छी परीक्षा हुई यहाँ तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “तल्हा ने आज वाज़िब कर लिया” रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा मुसलमान सिमट कर पहाड़ के पास आ गए और अल्लाह तआला ने सभी को मुश्रीकीन से बचा लिया।</p> <p>उहुद का दिन परीक्षा एवं जाँच का दिन था, अल्लाह तआला ने उस दिन मोमिनों की परीक्षा ली थी, और मुनाफ़िक़ ख़ुल कर सामने आ गए, तथा जिसे अल्लाह ने चाहा शहादत से सम्मानित किया।</p> <p>ग़ज़वा के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पुनः एक बार फिर कुरैश के निकलने की सूचना मिली ताकि मुसलमानों का समूल नाश कर दें, आप इस घायल अवस्था में भी मोमिनों को लेकर उनका मुकाबला करने के लिए निकले, जब हमरा अल-असद नामक स्थान पर कुरैश को इसकी सूचना मिली तो पस्पाई अपनाते हुए वो मक्का लौट गए।</p>
<p>सन ४ हिजरी</p>	<p>सन चार हिजरी में बेर -ए- मऊना की घटना घटी जिसमें सत्तर हाफ़िज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम क़त्ल कर दिए गए, और इसी वर्ष नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू नज़ीर का घेराव किया यहाँ तक कि उनके दिलों में धाक बैठ गई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें मदीना से निकाल बाहर किया, और उन्हीं के संबंध में सूरह ह़श्र नाज़िल हुई।</p>
<p>ग़ज़वा -ए- मुरैसीअ</p>	<p>हिजरत के पाँचवे वर्ष नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू मुसतलिक्क से युद्ध के लिए निकले और विजयी हो कर लौटे, इसी रास्ते में तयम्मूम मशरूअ हुआ अर्थात इसकी अनुमति दी गई, और इसी मार्ग में इफ़्क़ (बोहतान, आरोप, लांछन) की घटना घटी, जहाँ मुनाफ़िक़ों ने पाक व पवित्र मोमिनों की माता जी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर लांछन लगाया था, यह मामला स्वयं उनके लिए तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए बड़ा कठिन था यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने सूरह नूर में उनकी बराअत व सतीत्व का ऐलान किया, और बोहतान लगाने वालों को हद्द में कोड़े लगाए गए।</p>



<p>ग़ज़वा -ए- अहज़ाब</p>	<p>हिजरत के छठे वर्ष शव्वाल में ग़ज़वा -ए- खन्दक़ (अहज़ाब) घटा, जब यहूदियों ने कुरैश तथा जिनके संग उनकी संधि थी सबने मिल कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं आपके सहाबा को क़ल्ल करने का प्लान बनाया, इस प्रकार कुरैश, बनू सुलैम, बनू असद, फ़ज़ारा तथा अशजअ आदि मिल कर दस हज़ार की संख्या में मदीना आए।</p> <p>सलमान फारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खन्दक़ (खाई, गर्त) खोदने का विचार दिया, अतः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन हज़ार की संख्या में निकले और “सलअ” नामी पहाड़ को अपने पीछे किला के रूप में रखा तथा खन्दक़ को अपने सामने रखा, आप मैत्री संधि वाले बनू कुरैज़ा की ओर से निश्चित थे किंतु उसने संधि तोड़ दिया और आपके विरोधियों से मिल गया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने युद्ध के लिए आई हुई सेना तथा बनू कुरैज़ा की ओर नुऐम बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा, उन्होंने युक्ति लगा कर दोनों के बीच अलगाव करा दिया, फिर अल्लाह तआला ने उस अहज़ाब (सेना) पर वायु (हवा, तूफ़ान) को सेना के रूप में भेजा जिसने उनके तम्बू उखाड़ दिए और हांडियों को पलट दिया, तूफ़ान ने उन्हें हिला कर रख दिया और उनके दिलों में आतंक बैठ गया और वो पस्पा होने पर मजबूर हो गए, इस प्रकार उनकी धूर्तता उनके कुछ काम न आई और वो वापस लौट गए।</p> <p>और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू कुरैज़ा के पास आए और उनके बारे में निर्णय लेने का अधिकार साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया।</p> <p>और इसी ग़ज़वा के विषय में सूरा अहज़ाब नाज़िल हुई।</p>
<p>हुदैबिया की सुलह (मैत्री)</p>	<p>छठे वर्ष ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने चौदह सौ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को साथ लेकर उमरा की नीयत से निकले, जब आप हुदैबीय्या नामक स्थान पर पहुँचे तो कुरैश ने आपको मक्का में प्रवेश करने से रोक दिया, और इस बात पर मुसालहत (मैत्री) की कि वो आपस में दस साल तक नहीं लड़ेंगे, और यह मैत्री मोमिनों के लिए एक प्रकार से फ़तह (विजय) प्राप्त करना था जैसाकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا﴾ (निःसंदेह हमने आपको एक खुल्लम-खुल्ला विजय दे दिया)। अल-फ़तह: १।</p> <p>इस मैत्री में एक बात यह भी थी कि अगले वर्ष कुरैश मुसलमानों को उमरा के लिए मक्का आने की अनुमति देंगे, उमरा -ए- क़ज़ा (इस साल के छूटे हुए उमरा के बदले उमरा) सातवीं हिजरी के ज़िल क़ादा मास में अंजाम पाया।</p>
<p>ग़ज़वा -ए- ख़ैबर</p>	<p>हुदैबीय्या से लौटने के बीस दिन बाद मदीना के उत्तर में ख़ैबर के लिए आप निकले और वहां यहूदियों का लगभग बीस दिन तक घेराव किया, इसमें मुसलमानों को बहुत सारे कष्टों का सामना करना पड़ा, जब यहूदियों को अपने नाश का पक्का विश्वास हो गया तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुलह (मैत्री) करनी चाही, आप ने उनके प्राण की रक्षा की गारंटी देते हुए इस शर्त पर जाने दिया कि वो अपने पहने हुए कपड़ों के सिवा कुछ भी लेकर नहीं जाएंगे, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी ज़मीन की पैदावार के आधे हिस्से के एवज़ उनसे मुआहदा (संधि) किया।</p>



जाफर का आना	<p>जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खैबर में थे कि तभी अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमान होकर मदीना पधारे, और इसी बीच आपके चचेरे भाई जाफर बिन अबू तालिब और जो लोग हबशा में रुके हुए थे उनके साथ आ गए और खैबर में ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भेंट हो गई, और उन लोगों के संग अशअरी क़बीला के लोगों में से अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथी लोग भी आए।</p>
ग़ज़वा -ए- मूअता	<p>आठवें वर्ष ग़ज़वा -ए- मूअता की घटना घटी, और इसका कारण यह था कि शुरहबील बिन अम्र ग़स्सानी रोम के राजा ने उसकी ओर भेजे गए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दूत को क्रल्ल कर दिया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चहेते ज़ैद बिन हारिसा के प्रतिनिधित्व में तीन हजार सहाबियों को रवाना किया और फ़रमाया: “यदि ज़ैद शहीद हो जाए तो जाफर बिन अबू तालिब कमांडर होंगे और यदि जाफर भी शहीद हो जाए तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा सेनापति होंगे (रज़ियल्लाहु अन्हुम)” और उधर से हिरक़ल और उनके संधि-मित्र अरब लोग दो लाख की संख्या में निकले तथा मूअता नामक स्थान पर दोनों की भेंट हुई, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तय किए गए सभी कमांडर शहीद हो गए तो ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने पताका अपने हाथ में लिया और बड़े अच्छे ढंग से सेना का नेतृत्व किया एवं मुसलमानों को ले कर वहाँ से निकल गए और इस प्रकार अल्लाह तआला ने शत्रुओं से उन लोगों को बचा लिया।</p>
मक्का महा विजय	<p>इसी वर्ष कुरैश के संधि-मित्र बनू बकर ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के संधि-मित्र क़बीला ख़ुज़ाआ पर आक्रमण कर दिया और कुरैश ने भी गुप्त रूप से उनकी सहायता की, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सूचना मिली तो आपने मक्का विजय का निश्चय किया, अबू सुफ़ियान ने मदीना आकर इस विषय में बात करनी चाही परंतु आपने उसकी एक न सुनी, तो उसने अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा कि आप लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस संबंध में बात करें परंतु उन दोनों ने इंकार कर दिया, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला से दुआ किया कि अल्लाह कुरैश से इस मामले को गुप्त रखे ताकि उन्हें आपके आक्रमण की बिल्कुल भी ख़बर न हो तो अल्लाह तआला ने आपकी दुआ को क़बूल कर लिया, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दस हजार की संख्या में निकले यहाँ तक कि मक्का में प्रवेश कर गए।</p> <p>विजय से कुछ देर पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया।</p> <p>और जो बातें आपने मक्का विजय के पूर्व कही थीं उनमें से यह भी था कि: “जो अबू सुफ़ियान के घर में प्रवेश कर जाए उसे अमन है, और जो मस्जिद (-ए- हुराम) में प्रवेश कर जाए उसे अमन है तथा जो अपने घर के द्वार बंद करले उसे भी अमन है”, इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने केवल उसी से युद्ध किया जो युद्ध के लिए निकले, सिवाय उन चंद लोगों के जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा मुसलमानों को अत्यधिक कष्ट पहुँचाया था आपने उनके जान का कोई मोल नहीं रखा।</p> <p>जब आप मक्का में दाखिल हुए तो बिना एहराम की स्थिति में ही काबा का तवाफ़ किया (चक्कर लगाया), फिर उस्मान बिन तल्हा को बुलाया तथा उनसे काबा की कुंजी ले कर उसके अंदर एवं उसके आस-पास जो मूर्तियां थीं सबको तोड़ दिया, फिर कुंजी उस्मान बिन तल्हा को वापस कर दी।</p> <p>मक्का विजय के पश्चात एक बड़ी संख्या ने इस्लाम स्वीकार किया, बल्कि क़बीला के क़बीला लोग मुसलमान हो कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आने लगे।</p>



<p>मूर्तियों को तोड़ना</p>	<p>जब अल्लाह तआला ने अपने नबी को मक्का पर विजय दे दिया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों को मक्का के आस-पास मूर्तियों को तोड़ने के लिए भेजा, अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को सुवाअ को तोड़ने के लिए भेजा, साद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को मनात तोड़ने के लिए भेजा, ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को उज़्ज़ा तोड़ने के लिए भेजा, तुफैल रज़ियल्लाहु अन्हु को जुल कफ़ैन तोड़ने के लिए तथा अली रज़ियल्लाहु अन्हु को तैई क़बीला का बुत तोड़ने के लिए भेजा।</p>
<p>ग़ज़वा -ए- हुनैन</p>	<p>जब हवाज़िन वालों ने मक्का विजय के बारे में सुना तो एक क़ाफ़िला ले कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर निकला, और अपने संग अपने धन, महिलाएँ तथा अपने बच्चे भी लाए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनका मुकाबला करने के लिए बारह हजार की संख्या ले कर निकले, उस दिन मुसलमान अपनी संख्या पर आत्ममुग्ध थे यहाँ तक कि जब हुनैन नामक घाटी में पहुँचे तो हवाज़िन ने उनके ऊपर एक जुट हो कर हमला कर दिया जिसकी वजह से घबराहट के कारण लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से असावधान हो गए, और आपके साथ बस कुछ मुहाज़िर और आपके घर वाले रह गए, फिर अल्लाह तआला ने मुसलमानों को हौसला दिया और वो पलट कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए, और आपके संग मिल कर युद्ध किया यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने शत्रुओं के विरुद्ध उन्हें विजयी कर दिया, और हवाज़िन के लोग भाग कर ताइफ़ चले गए। फिर हवाज़िन के चौदह लोग मुसलमान हो कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और आपसे अपने बंदियों को स्वतंत्र करके उनपर कृपा करने का निवेदन किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा ही किया और आपकी देखा-देखी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी ऐसा किया।</p>
<p>ग़ज़वा -ए- ताइफ़</p>	<p>जब आप हवाज़िन से फ़ारिग़ हुए तो ग़ज़वा -ए- ताइफ़ का इरादा किया, अतः आप वहाँ आए और उनके क़िला (दुर्ग) का आठ दिन तक घेराव किए रखा, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिना युद्ध किए वापस लौट गए।</p>
<p>ग़ज़वा -ए- तबूक</p>	<p>छठी हिजरी में ग़ज़वा -ए- तबूक (ग़ज़वा -ए- उस्मा अर्थात संकट एवं निर्धनता) की घटना पेश आई, वह समय अत्यंत गर्मी का तथा फलों के पकने एवं छाया में रहने का था, ऐसे समय में युद्ध के लिए निकलना बड़ा कठिन था, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने निकलने का इरादा किया तो लोगों को खर्च करने के लिए उभारा, तो उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सौ ऊँट मय टाट व कजावा (काठ, हौदा) तथा उसके साथ एक हजार दीनार भी दिया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “आज के बाद उस्मान जो भी करें उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकता”, और अन्य सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी सामर्थ्य भर अल्लाह के मार्ग में खर्च किया। आम मुनाफ़िक़ीन इससे पीछे रहे, और आपके चयनित सहाबा में से भी तीन लोग काब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैया और मुरारह बिन रबीअ रज़ियल्लाहु अन्हुम बिना किसी उज़्र (विवशता) के पीछे रह गए थे, तो उन लोगों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना वापस आने पर क्षमा याचना की, तो उन्हीं के विषय में सूरा तौबा की यह आयत उतरी (और वो तीन लोग जो पीछे रह गए थे)। अल-तौबा: ११८, अल्लाह तआला ने उनकी सच्चाई के सबब उनकी तौबा को स्वीकार कर लिया, और इस सूरा में मुनाफ़िक़ों की निंदा की गई है तथा इसी चर्चा पर यह सूरा समाप्त होती है, इसीलिए इस सूरा का नाम फ़ज़िहा (फ़जीता करने वाला) भी रखा गया है क्योंकि इसने उन लोगों का फ़जीता तथा अपयश कर दिया था।</p>





<p>ग़ज़वा -ए- तबूक</p>	<p>इसी ग़ज़वा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐला वालों से जिज़या के ऊपर सुलह (संधि) किया, इसी प्रकार जरबा तथा अज़रह वालों से भी, और उनके लिए परवाना (आदेश-पत्र) लिख कर दिया, एवं दौमा के राजा उकैदिर से भी जिज़या लेकर संधि किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तबूक में दस से कुछेक ऊपर रातों तक रुके रहे फिर बिना युद्ध के ही मदीना लौट आए। जब आप मदीना लौट कर आए तो अल्लाह तआला ने मस्जिद -ज़िरार- को ध्वस्त करने का आदेश दिया जिसे मुनाफ़िक़ों ने बनाया था (हानि पहुँचाने, कुफ़्र करने तथा मोमिनों में दराइ डालने और उस व्यक्ति के घात में बैठने के लिए जो इससे पहले अल्लाह और उसके रसूल से लड़ चुका है)। अल-तौबा: १०७, अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञा से यह मस्जिद ध्वस्त कर दी गई, और यह अंतिम ग़ज़वा था जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं सम्मिलित हुए थे।</p>
<p>प्रतिनिधी मंडल</p>	<p>ग़ज़वा -ए- तबूक के बाद सक्रीफ़ ने इस्लाम स्वीकार किया, और हिजरत का यह नौवां वर्ष प्रतिनिधि मंडलों का वर्ष कहलाया, क़बीला वाले समूह के समूह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर इस्लाम स्वीकार करते थे, इन्हीं में से बनी तमीम का वपद था जिसके सरदार उत्तारिद बिन हाजिब तमीमी थे, और तैई का वपद (प्रतिनिधि मंडल) जिसके सरदार ज़ैद अल-ख़ैल थे, और अब्दुल क़ैस का वपद जिसके सरदार जारूद अब्दी थे, और बनू हनीफ़ा का वपद भी जिसमें वह मुसैलमा कज़्ज़ाब (महा झूठा) भी था जिसने बाद में चल कर नबूवत का झूठा दावा किया।</p>
<p>अबू बकर का हज</p>	<p>हिजरत के नौवें वर्ष नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर (सरदार) बना कर हज के लिए भेजा, तो उन्होंने लोगों के संग (अमीर की हैसियत से) हज किया, और अली रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा जो सूरा तौबा की प्रारंभिक आयतें पढ़ रहे थे और मुश्रीकीन को उनकी संधि लौटा रहे थे, और लोगों में यह ऐलान कर दिया कि इस वर्ष के बाद से मुश्रीकीन तथा नंगे लोग काबा का तवाफ़ नहीं कर सकेंगे जैसे वो लोग जाहिलीयत युग में किया करते थे।</p>
<p>हज्जतुल वदा</p>	<p>सन दस हिजरी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्जतुल वदा (अंतिम हज) किया और आपके संग विभिन्न क़बीलों तथा नगर के लोग निकले यहाँ तक कि संख्या एक लाख के पार पहुँच गई, चुनाँचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें हज के मनासिक (ढंग) बताए, और अरफ़ा के दिन उन्हें खुत्बा (भाषण) दिया और अल्लाह तआला का यह फरमान तिलावत कर के सुनाया: (आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूर्ण कर दिया, और तुम्हारे ऊपर अपनी नियामतें पूरी कर दीं और तुम्हारे लिए इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हो गया)। अल-माइदा: ३। इस प्रकार आपने उन्हें सूचना दी कि इस्लाम पूर्ण हो चुका, और उन्हें कुरआन व हदीस को दृढ़ता के साथ पकड़े रहने की वसीयत की और एक के लिए दूसरे के रक्त (प्राण), धन तथा इज़्ज़त के साथ खिलवाड़ करना ह़राम करार दिया, मानो यह आपकी ओर से अंतिम व विदाई वाला खुत्बा था।</p>
<p>उसामा को भेजना</p>	<p>सन ग्यारह हिजरी सफर के महीना में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोम के लोगों से युद्ध करने के लिए एक सेना तैयार की जिसका सेनापति उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बनाया, अतः जब वो निकले और जुर्फ़ के स्थान पर पड़ाव डाला ही था कि इसी बीच नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बीमारी की सूचना उन्हें प्राप्त हुई।</p>





आप ﷺ के ग़ज़वों का सारांश

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़ज़वों, बुऊस एवं सरीय्या का संक्षिप्त विवरण

आपके सभी ग़ज़वात, बुऊस तथा सराया (वह सेना जो आपने लड़ाई के लिए भेजे) यह सब हिजरत के बाद दस वर्ष के अंतराल में हुआ।

जहाँ तक आपके सरीय्या एवं बुऊस की बात है तो उनकी संख्या लगभग साठ है, और ग़ज़वों की संख्या २७ है, जिनमें से नौ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने युद्ध लड़ा जो इस प्रकार हैं: बद्र, उहुद, खन्दक, कुरैजा, मुसतलिक, खैबर, फत्ह -ए- मक्का, हुनैन, ताइफ, और इनमें से कुछ के संबंध में कुरआन भी उतरा:

इन ग़ज़वों के संबंध में जो कुरआन में अवतरित हुआ

ग़ज़वा -ए- बद्र: इस संबंध में सूरा अन्फाल उतरी, और इसको सूरा बद्र भी कहा जाता है।

ग़ज़वा -ए- उहुद: इस संबंध में सूरा आल -ए- इमरान का अंतिम भाग उतरा, अल्लाह तआला के इस फरमान: (हे नबी उस समय को याद करो जब आप सुबह ही सुबह अपने घरों से निकल कर मोमिनों को युद्ध के मैदान में लड़ाई के मोरचों पर बैठा रहे थे)। आले इमरान: १२१, से लेकर अंत से कुछ पहले तक।

ग़ज़वा -ए- खन्दक, बनू कुरैजा और खैबर: इस संबंध में सूरा अहज़ाब का कुछ भाग उतरा।

ग़ज़वा -ए- बनू नज़ीर: इस विषय में सूरा हश्र नाज़िल हुई।

ग़ज़वा -ए- हुदैबीय्या व खैबर: इस संबंध में सूरा फत्ह अवतरित हुई, और इसमें फ़त्ह (मक्का विजय) की ओर इशारा किया गया है, और सूरा नज़्म में स्पष्ट रूप से इस फ़त्ह का वर्णन किया गया है।

ग़ज़वा -ए- तबूक: इस विषय में सूरा तौबा की कुछ आयतें नाज़िल हुईं।

एक ग़ज़वा में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घायल हुए जो कि ग़ज़वा -ए- उहुद है, और आप के संग फरिश्तों ने बद्र, उहुद तथा हुनैन में युद्ध लड़ा, और खन्दक के दिन फरिश्ते अवतरित हुए तो मुश्रीकीन हिला दिए एवं उनकी पराजय हुई, और इसी युद्ध में आपने मुश्रीकीन के चेहरों पर कंकर फेंका तो वो भाग गए, और दो युद्धों में आप को विजय प्राप्त हुआ: बद्र और हुनैन में, और एक युद्ध ताइफ़ में मिंजनीक (मंजनीक, तोप के समान एक यंत्र जिससे पत्थर बरसाए जाते थे) का प्रयोग किया, और खन्दक के द्वारा एक युद्ध में बचाव किया जोकि अहज़ाब है जिसका विचार सलमान फारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दिया था।





नबी ﷺ की बीमारी और मृत्यु

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी और मृत्यु

फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को संसार में रहने तथा अल्लाह से भेंट करने एवं जन्नत में से एक का चयन करने का अधिकार दिया तो आपने अल्लाह से भेंट और जन्नत को चुना, अतः इसके पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत बीमार हो गये तो आपने अपनी पत्नियों से आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में तीमारदारी (परिचर्या) के लिए रुकने की इच्छा प्रकट की जिसको सभी ने सहृष स्वीकार कर लिया, जब आपके अंदर मस्जिद में जा कर नमाज़ पढ़ाने की शक्ति नहीं बची तो अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को आदेश दिया कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएं जो इस बात की ओर इशारा था कि आप के बाद वही खलीफ़ा होंगे।

सन ग्यारह हिजरी सोमवार के दिन बारह रबीउल अव्वल को आप लोगों की ओर निकले जब वो फ़ज्र की नमाज़ पढ़ रहे थे तो आपने पर्दा उठाया और दरवाज़ा खोला ताकि उनको देखें, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी ओर इशारा किया कि नमाज़ मुकम्मल करें और आप उनको देख कर मुस्काए, फिर जब चाश्त (सूर्योदय से एक पहर) का समय हुआ तो आपके प्राण पखेरू उड़ गए, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु सबसे बड़ी विपदा थी जो मुसलमानों पर आन पड़ी थी, आपके मृत्यु से मुसलमानों को अत्यंत दुःख पहुँचा।

फिर लोग अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास इकट्ठा हुए और आपके लिए ख़लाफ़त की बैअत की, चूँकि आपका सर्वप्रथम इस्लाम स्वीकार करना और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद इस उम्मत पर सबसे अधिक उपकार करना सर्वविदित था अतः कोई भी आपकी बैअत से पीछे नहीं रहा।

तत्पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को स्नान कराया गया और तीन सफ़ेद कपड़े में कफ़न दिया गया फिर मोमिनों की माता आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के कमरे में उसी स्थान पर जहाँ आपने अंतिम सांस ली थी वहीं दफ़न किया गया, और नबियों के विषय में यही अल्लाह की सुन्नत रही है कि वो वहीं दफ़न होते हैं जहाँ उनकी मृत्यु होती है, तथा आपके जनाज़ा की नमाज़ इंसानों एवं जिनमें दोनों ने पढ़ी। आप पर मेरे रब का दरूद व सलाम नाज़िल हो, हम इस बात की गवाही देते हैं कि आपने अमानत अदा कर दिया, उम्मत को पूर्णरूपेण नसीहत कर दी, और अल्लाह के रास्ते में जिहाद का हक़ अदा कर दिया, अतः अल्लाह तआला उससे भी बेहतर बदला आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दे जो वह एक नबी को उसकी उम्मत की ओर से देता है। और हरेक प्रकार की प्रशंसा समस्त संसार के रब (प्रभु व पालनहार) अल्लाह ही के लिए है।

समाप्ति:

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कवि हस्सान बिन साबित ने निम्नांकित पंक्तियाँ कही थीं:

हे मेरे रब, अपने नबी के संग हमें जन्नत में इस प्रकार से इकट्ठा कर कि अति इर्ष्यालु आँखें इससे दूर रहें

जन्नतुल फ़िरदौस में, और इसे हमारे भाग्य में लिख दे, हे तेज, प्रताप व जलाल, बुलंदी एवं सरदारी वाले

अल्लाह एवं जो उसके अर्श के आस-पास है और पवित्र आत्मा सभी मुबारक अहमद ﷺ पर दरूद भेजते हैं



तृतीय परीक्षा

गलत	सही	प्रश्न
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	☛ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बकरियां चराईं जोकि आपके सब्र, निर्धनों एवं दुर्बलों पर कृपा एवं उनका ध्यान रखने का एक बड़ा कारण था
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	☛ जब आपकी आयु चालीस वर्ष हुई तो आप पर नबूवत का सूर्य उदय हुआ, और अल्लाह तआला ने जुमा (शुक्रवार) के दिन आप को रिसालत दे कर सम्मानित किया
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	☛ रसूलुल्लाह के प्रति क्रूरेश का अत्याचार बहुत बढ़ गया यहाँ तक कि आपको तीन वर्ष के लिए अबू तालिब की घाटी में कैद कर दिया, और जब आप घाटी से निकले तो आपकी उम्र ४९ वर्ष हो चुकी थी

☛ आप मक्का में पैदा हुए: <input type="checkbox"/> फ़ील वाले साल <input type="checkbox"/> हिजरत से ५३ वर्ष पूर्व <input type="checkbox"/> सभी
☛ आपके व्ह्य के प्रारंभिक दौर मे: <input type="checkbox"/> आप एकांतप्रिय थे <input type="checkbox"/> सच्चा सपना <input type="checkbox"/> सभी
☛ व्ह्य की श्रेणियों की संख्या: <input type="checkbox"/> पाँच <input type="checkbox"/> सात <input type="checkbox"/> तीन
☛ आप के दावत की श्रेणी: <input type="checkbox"/> दो <input type="checkbox"/> तीन <input type="checkbox"/> पाँच
☛ फिर आपको सशरीर व प्राण रात्रि में मस्जिद -ए- अक्रसा ले जाया गया, फिर वहाँ से सातों आसमान के ऊपर (....) अल्लाह के पास ले जाया गया जहाँ अल्लाह ने आपसे वार्तालाप किया और आप के ऊपर नमाज़ फ़र्ज़ किया: <input type="checkbox"/> सशरीर <input type="checkbox"/> सप्राण <input type="checkbox"/> शरीर एवं प्राण के साथ
☛ इस्लाम की सर्वप्रथम मस्जिद है: <input type="checkbox"/> हराम <input type="checkbox"/> नबवी <input type="checkbox"/> अक्रसा <input type="checkbox"/> कुबा
☛ क़िबला परिवर्तन हुआ था: <input type="checkbox"/> हिजरत के पूर्व मक्का में <input type="checkbox"/> हिजरत के दूसरे वर्ष <input type="checkbox"/> हिजरत के तीसरे वर्ष
☛ ग़जवा -ए- बद्र रमज़ान में सन: <input type="checkbox"/> दो हिजरी में हुआ था <input type="checkbox"/> तीन हिजरी में हुआ था

अबू बकर सिद्दीक़	ज़ैद बिन हारिसा	बिलाल बिन रबाह	अली बिन अबू तालिब	सर्वप्रथम जो रसूल पर ईमान लाए
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	पुरुषों में
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	बच्चों में में
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	स्वतंत्र दासों में
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	दासों में



सात वर्ष	अब्दुल्लाह की मृत्यु हुई	लगभग सात वर्ष	अब्दुल मुत्तलिब	अबू तालिब ने	आपका लालन-पालन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आपकी माता के बाद आपके दादा ... ने पाला
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	फिर उनकी मृत्यु हुई और आपकी आयु थी
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	उसके बाद आपके सगे चाचा ... आपका पालन किया
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	और आप अभी गर्भ में थे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आपकी माता का देहांत हुआ और आपकी आयु

केवल एक ग़ज़वा में	उनमें से नौ में	सत्ताईस	साठ	दस साल	आपके ग़ज़वा व आपके द्वारा भेजी हुई सेना (बुऊस)
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आपके समस्त ग़ज़वा व बुऊस हिजरत के पश्चात मात्र ... में हुए
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आपके सरीय्या व बुऊस की संख्या है लगभग
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आपके ग़ज़वा की संख्या
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आपने युद्ध लड़ा
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आप घायल हुए





विषय - सूची

❁ प्राक्कथन	3
❁ नबी ﷺ के गुण	5
❁ प्रथम परीक्षा	13
❁ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत	15
❁ द्वितीय परीक्षा	20
❁ आप ﷺ की विशेषताएं	23
❁ आप ﷺ की पत्नियाँ एवं सगे-संबंधी	26
❁ नबूवत के पूर्व आप ﷺ की सीरत	31
❁ वह्य का आरंभ	33
❁ आप ﷺ की सीरत का मक्की काल	36
❁ आप ﷺ की सीरत का मदनी काल	39
❁ आप ﷺ के गज्रों का सारांश	46
❁ आप ﷺ की बीमारी और मृत्यु	47
❁ तृतीय परीक्षा	48
❁ विषय – सूची	50

